चंबल के

लोधी क्षत्रिय वीर

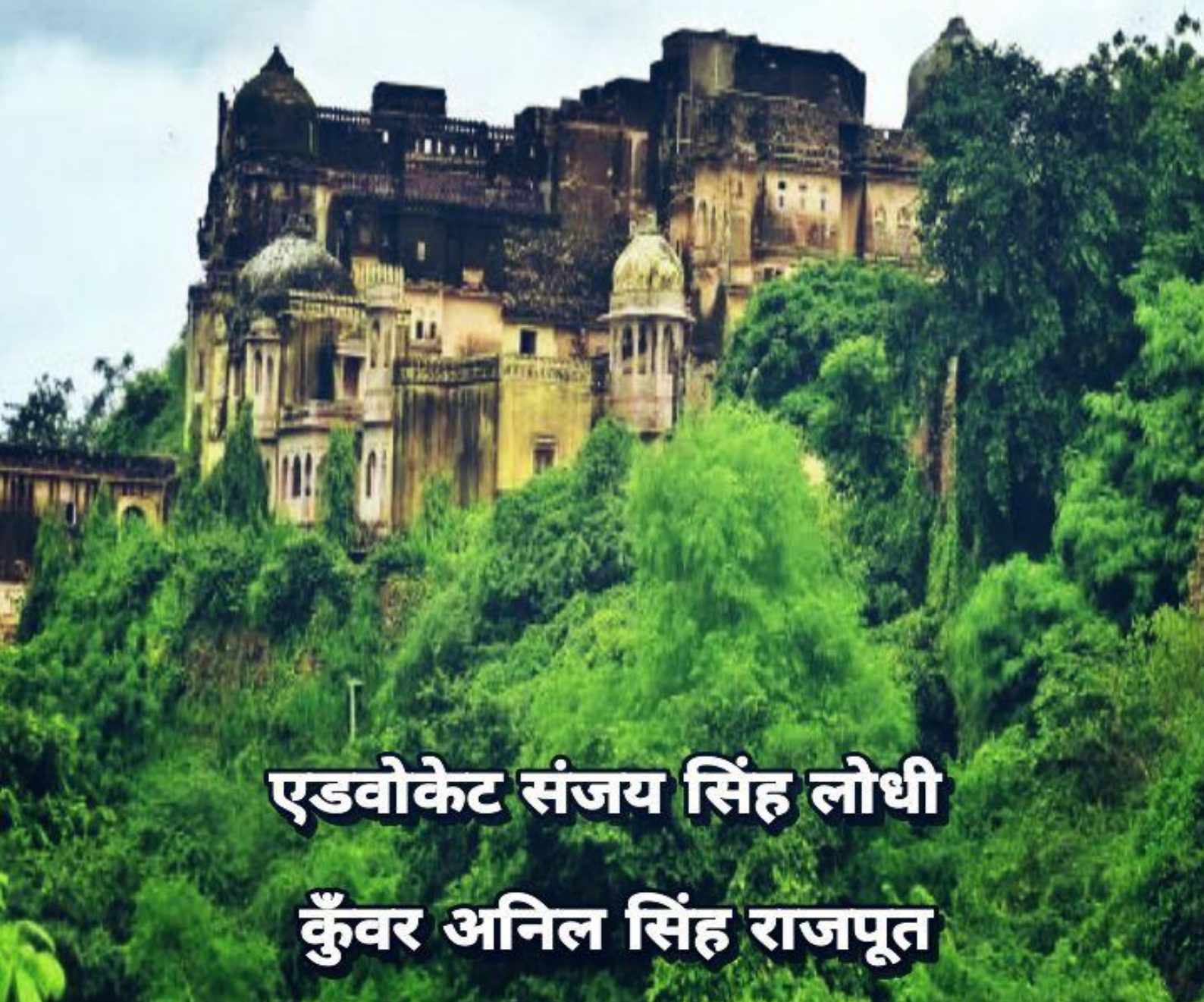

एडवोकेट संजय सिंह लोधी

कुँवर अनिल सिंह राजपूत

चम्बल के लोधी क्षत्रिय वीर

एडवोकेट संजय सिंह लोधी

कुँवर अनिल सिंह राजपूत

प्राक्कथन

इतिहास के जिन महापुरषों को कुरेद कर मैं समक्ष रखने का दुस्साहस कर रहा हूँ, वस्तुतः उसे प्रकाश में लाना अति आवश्यक हो गया है। किसी भी जाति समाज को प्रगति पथ पर निरंतर बढ़ने के लिए दो बिन्दु अति आवश्यक हैं। पहला समाज/वातावरण में होने वाले बदलावों को सकारात्मक दृष्टिकोण से अपनाना साथ ही उसके ज्ञानात्मक पहलुओं को जो कि शैक्षणिक अथवा जीविकोपारक हैं, को ग्रहण करना। दूसरा- अपने अतीत, अपने समाज, जाति, देश व धर्म के इतिहास से भलीभाँति परिचित होना, ताकि उनसे आने वाले समय के लिए सकारात्मक सबक लिए व दिए जा सकें।

यह पुस्तक भारत के जिन राज्यों के जिलों में चम्बल नदी बहती हे उन जिलों के लोधी क्षत्रिय वीरों के इतिहास के बारे में है। इन सभी वीरों के बारे में इन सभी जिलों के आम लोग सायद कम ही जानते हों क्यूंकि किसी भी इतिहासकार ने इन पुण्य आत्माओं को इतिहास में उचित जगह नहीं दी हे लेकिन वो कहते है न इतिहास छुपाने से भी नहीं छिपता ठीक यही इन सभी महापुरुषों के साथ हुआ है ये सभी आज भी चम्बल के लोधी क्षत्रियों के और जन मानस के दिलो दिमाग में निवास करते है और वो लोग मौखिक ही इन सभी महापुरुषों का इतिहास बड़े गर्व के साथ अन्य लोगो को बताते हैं। इस पुस्तक को मेने एडवोकेट संजय सिंह लोधी जी के साथ सम्पूर्ण रिसर्च और खोजबीन के बाद लिखा है.

अन्तः इस पुस्तक को पाठक किसी पूर्वागृह से गृसित होकर न देखें बल्कि, इस पुस्तक को अध्यन/ रिसर्च मान कर पढ़ें। मेरी ये हार्दिक विनती/इच्छा है कि आप इसका मूल्याकंन पुस्तक में प्रस्तुत तथ्यों के आधार पर ही करें। साथ ही मैं विनती करता हूँ कि इस पुस्तक में मेरे द्वारा की गयी मात्रात्मक गलतियों के लिए मुझे क्षमा करें।

मैं उन सभी का तहे-दिल से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने- साहित्य, तथ्य, सुझाव देकर व अन्य तरीकों से इस पुस्तक लेखन में मेरी मदद की है।

स्व. खेम सिंह वर्मा, स्व. इंद्रपाल सिंह भदौरिया, इंजीनियर रविंद्र सिंह, इंजीनियर आनंद दुबे, हितेश सिंह लोधी, युवराज सिंह, ठाकुर देशराज सिंह लोधी ऋषभ तिवारी, पंडित सोमेश शर्मा, दीपक नेगी का उनकी कृतियां व् सहयोग के लिए में हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद

अनिल सिंह राजपूत

अनुक्रम

अध्याय 1 - चम्बल नदी का इतिहास

अध्याय 2 - लोधी क्षत्रियों का वैदिक कालीन इतिहास

अध्याय 3 - गोहद युद्ध के रणबाँकुरे

अध्याय 4 - चम्बल के लोधी क्षत्रिय वीर

अध्याय 5 - इतिहास के झरोखे से

अध्याय 1 - चम्बल नदी का इतिहास

चंबल भारत में बहने वाली एक नदी है। चंबल यमुना नदी की मुख्य सहायक नदी है और चम्बल नदी का उद्गम मध्य प्रदेश राज्य के पश्चिम में विंध्य पर्वतमाला के ठीक दक्षिण में महू से निकलती है, अपने उद्गम से उत्तर में यह राजस्थान राज्य के दक्षिण- पूर्वी भाग में बहती है। पूर्वोत्तर में मुड़कर यह कोटा के पृष्ठ भाग तथा राजस्थान मध्य प्रदेश की सीमा के समानांतर बहती है; पूर्व-दक्षिण पूर्व में सरककर यह उत्तर प्रदेश-मध्य प्रदेश सीमा के एक हिस्से का निर्माण करती है और उत्तर प्रदेश में बहते हुए 900 किमी की दूरी तय करके यमुना नदी में मिल जाती है। बनास, काली सिंध, शिप्रा और पार्वती इसकी मुख्य सहायक नदियां हैं। चंबल के निचले क्षेत्र में 16 किमी लंबी पट्टी, बीहड़ क्षेत्र है, जो त्वरित मृदा अपरदन का परिणाम है और मृदा संरक्षण का एक प्रमुख परियोजना स्थल है।

यह दक्षिणी पठार से निकलने वाली नदी है। मध्यप्रदेश में मऊ के निकट समुद्रतल से 616 मीटर ऊंची जनापाव पहाड़ी से चम्बल नदी निकली है। उत्तर पूर्व की ओर मध्य प्रदेश के धार, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर जिलों में बहती हुई चौरासीगढ़ के निकट चम्बल राजस्थान की सीमा में प्रवेश करती है। यह राजस्थान के कोटा, सवाईमाधोपुर तथा धौलपुर जिलों में अनुमानित 210 किलोमीटर बहती है। कोटा में गांधी सागर, राणा प्रताप सागर और जवाहर सागर बांध इसी नदी पर निर्मित हुए हैं। इस नदी की कुल लम्बाई 966 किलोमीटर हैं। अंत में चम्बल उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में आकर यमुना मे समाहित हो जाती है।

ग्रन्थों के अनुसार

• महाभारत के अनुसार राजा रंतिदेव के यज्ञों में जो आर्द्र चर्म राशि इकट्ठा हो गई थी उसी से यह नदी उदभुत हुई थी-

'महानदी चर्मराशेरूत्क्लेदात् ससृजेयतःततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्याता स महानदी'।

• कालिदास ने भी मेघदूत-पूर्वमेघ 47 में चर्मण्वती को रंतिदेव की कीर्ति का मूर्त स्वरूप कहा गया है-

आराध्यैनं शदवनभवं देवमुल्लघिताध्वा,
सिद्धद्वन्द्वैर्जलकण भयाद्वीणिभिदैत्त मार्गः।

व्यालम्बेथास्सुरभितनयालंभजां मानयिष्यन्,
स्रोतो मूत्यभुवि परिणतां रंतिदेवस्य कीर्तिः'।

इन उल्लेखों से यह जान पड़ता है कि रंतिदेव ने चर्मवती के तट पर अनेक यज्ञ किए थे।

• महाभारत में भी चर्मवती का उल्लेख है -

'ततश्चर्मणवती कूले जंभकस्यात्मजं नृपं ददर्श वासुदेवेन शेषितं पूर्ववैरिणा'

अर्थात - इसके पश्चात सहदेव ने (दक्षिण दिशा की विजय यात्रा के प्रसंग में) चर्मण्वती के तट पर जंभक के पुत्र को देखा जिसे उसके पूर्व शत्रु वासुदेव ने जीवित छोड़ दिया था। सहदेव इसे युद्ध में हराकर दक्षिण की ओर अग्रसर हुए थे।

• चर्मण्वती नदी को वन पर्व के तीर्थ यात्रा अनु पर्व में पुण्य नदी माना गया है –

'चर्मण्वती समासाद्य नियतों नियताशनः रंतिदेवाभ्यनुज्ञातमग्निष्टोमफलं लभेत्'।

• श्रीमदभागवत में चर्मवती का नर्मदा के साथ उल्लेख है –

'सुरसानर्मदा चर्मण्वती सिंधुरंधः'

• इस नदी का उदगम जनपव की पहाड़ियों से हुआ है। यहीं से गंभीरा नदी भी निकलती है। यह यमुना की सहायक नदी है।

• महाभारत में अश्वनदी का चर्मण्वती में, चर्मण्वती का यमुना में और यमुना का गंगा नदी में मिलने का उल्लेख है –

मंजूषात्वश्वनद्याः सा ययौ चर्मण्वती नदीम्,
चर्मण्वत्याश्च यमुना ततो गंगा जगामह।
गंगायाः सूतविषये चंपामनुययौपुरीम्'।

चम्बल नदी

अध्याय 2 – लोधी क्षत्रियों का वैदिक कालीन इतिहास

लोध, लोधा, लोधी, लोधी राजपूत, लोधी ठाकूर व लोधी क्षत्रीय मुख्य रूप से इन्हीं नामों से देश भर में इस जाति विशेष को पहचाना जाता है। लोध (लोधी) शब्द का पहला उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में अध्याय चार के 53वे सूत्र के 23वे मंत्र, जिसे 3, 53, 23 भी कहा जाता है, के अनुसार लोध का मतलब योद्धा है। मंत्र कुछ इस प्रकार है।

न सायकस्य चिकते जनासो लोधं, नयन्ति पशु मन्य माना।

न वाजिनं-वाजिना हास्यन्ति, न गर्दभं पुरो अश्वान्नयन्ति।।

विद्वानों व ऋग्वेद के ज्ञाताओं के मतानुसार इस मंत्र में लोध शब्द का प्रयोग 'वीर पुरूष' अथवा योद्धा के लिए किया गया है। महर्षि विश्वामित्र इस मंत्र में इन्द्र को वीर योद्धाओं के गुणों के विषय में समझा रहे हैं। इस समय तक जातियों की उत्पत्ती नहीं हुई थी, अपितु मनुष्य का वर्ण कर्म प्रधान-था। आज की मौजूदा किसी अन्य जाति के बारे में ऋग्वेद में इस तरह का कोई उदाहरण नहीं है।

लोध शब्द का दूसरा उदाहरण पुराणों में महा पुराण "भविष्य पुराण"में मिलता है। भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व अध्याय-15 में देव मुनि महर्षि नारद भविष्यवाणी करते हैं

परस्पर विरोधानाम द्विजानाम क्षत्रियाणाम्।

पितश्गोः अवतरिान्त क्षत्रियाणाम् हताकिलः।

सर्वदेशस्यवासीनां क्षत्रियाणाम् दुष्टचेतसाम।

त्रिसप्त कृत्वा बाहुनातिक्षत्रियां करों महिम्।।

युद्धात्पलायिता शुराः मुक्त्वा यज्ञोपवीतक।

लोधेश्व समीपस्था भस्मनाअंग लेपिताः।।

क्वचित्काले स्थिताः सर्वे रूद्रध्यानेन तत्पराः।

प्रसन्नोभूयो शिवः पश्चात् वरंपुत्र बृणीष्वहि।।

पाहि पाहि शिवा! सर्वान् शरणंगत वत्सलाः।

कुलनाशनम् कृपाम्यहम् भृगु अवहरिष्यति।।

लोधीति शिव भाषितः तदा लोधी भविष्यति।।

उपरोक्त मंत्रों में महर्षि नारद भविष्यवाणी करते हैं कि, जब ब्राह्मणों और क्षत्रियों में विरोध होगा तब क्षत्रिय शक्ति को समाप्त करने के लिए भगवान विष्णु परशुराम के रूप में अवतरित होंगे। परशुराम निडर क्षत्रियों का वध करने के लिए उन्हें ढूंढेंगे। घबराये क्षत्रिय शस्त्र व यज्ञोपवित का त्याग कर शरीर पर भस्म

लपेट कर शिव की आराधना में लीन हो जाएंगे। उनकी तपस्या से प्रसन्न हो महादेव उनसे वर माँगने को कहेंगें। तब वे क्षत्रीय महादेव से कहेंगे कि, 'है महादेव भगवान् विष्णु अवतरित हो कर हमारे कुल का विनाश करने पर आतुर हैं, इनसे हमारी रक्षा कीजिए।' तब शिव उनका नाम लोध के स्थान पर 'लोधी' रख कर अपनी शरण में अपने गणों के रूप में शामिल कर लेते हैं। शास्त्रों और विद्वानों के अनुसार परशुराम त्रेता-युग में रामायण के कालखण्ड से पहले अवतरित हुए थे, यानि लोधी शब्द अथवा लोधियों का क्षत्रित्व त्रेता युग के पहले से मौजूद था। भविष्य पुराण के पंद्रहवे अध्याय में ही एक अन्य सूत्र जिसमें स्वंय भगवान महादेव अपने जेष्ठ पुत्र कार्तिकेय से कहते हैं

लोध पुर्याजनाः सर्वे लोध नामक क्षत्रियाः।

लोधेश्वर इति भाषितः लोधय नाम भविष्यति।।

हे कार्तिकेय, सभी लोध क्षत्रिय मेरी शरणागत हैं, मेने इन्हें लोधी नाम दिया है और स्वंय मैंने भी लोधेश्वर की पदवी धारण की है। एक अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण हमें ग्रंथ 'भृगु' संहिता उत्तर भाग, श्री परशुराम विजय अध्याय 34, पश्चिम यात्रा भृगुवाच में स्वयं परशुराम महर्षि अत्रि को बता रहे हैं कि

राजवन्शे महत्कष्टमुपस्थित मितिद्रुतम्।

गत्वा पालयिता युद्धात्श लोधेशरणं गताः।।

लोधि पूजयन्तों तेषा हनन कम्पया।

द्रष्ट्या प्रवीन महादेवो मैव प्रकुरू भागव।।

अन्यथा भस्मतां नूनं गमिष्यति धश्त वश्त।

लोधिनः क्षत्रीया सर्वे मत्सेवा न पारायण।।

येते मत्शरणं प्रप्ता निज प्राणाभिरक्षया।

मुञ्चवे राम बन्धत्व गच्छ शीघ्र यथा गताः।

भद्राज्ञया पुनश्चैते निवसन्तु मदन्तिके।।

भृगु संहिता के उपरोक्त मंत्र इस दृष्टिकोण से अति महत्वपूण है कि, स्वयं परशुराम यहाँ अत्रि मुनि को लोध और लोधियों से महादेव के सम्बन्ध के विषय में बता रहे हैं। संक्षेप में परशुराम अत्रि मुनि से कह रहे हैं कि, हे मुनिवर राजवंश को त्याग कर लोधी शिव की शरण में जा पहुँचे हैं, और अब उन्हें मेरा किन्चित भी भय नहीं है। मैने जब उन पर अपने कुठार से वार करना चाहा तब स्वयं महादेव ने बीच में आकर उनकी रक्षा की। मैं स्वयं अपने प्राणों की रक्षा हेतु वहाँ से वापस लौट आया हूँ।

इसी तरह का एक और उदाहरण, एक अन्य ग्रंथ “परशुराम संहिता, प्रहस्त सम्वादे अध्याय 82 के 19वे श्लोक में मिलता है। जहाँ परशुराम के आश्रम में प्रहस्त मुनि से चर्चा के दौरान स्वयं परशुराम प्रहस्त मुनि से कहते हैं कि, हे मुनिवर-:

ये आहवे क्षत्रण नावलोकिताः मया ते शंकरः पातु स्वकीय दासः।

ते गुप्त क्षत्रीयाः भव एव लोधी मुक्त्वोपवीतं कृर्षिकर्म तत्पराः।।

हे मुनीवर ये वे ही लोधी क्षत्रिय हैं, जिनसे मेरा युद्ध हुआ और अब वे शिव की शरण में जा पहुंचे हैं। उन्होंने अपने शस्त्र व यज्ञोपवित से मुक्त होकर भगवान शंकर के कहने पर कृषि कार्य में तत्पर हो गए हैं।

परम पिता ब्रह्मा जी के एक अन्य मानस पुत्र सन्तकुमार, 'सन्त कुमार सहिंता' के उत्तर भाग के 18वे अध्याय में लिखते हैं कि

ब्रह्माव्रती एकदा नर्मदा तीरे विचरन्ति पितामह!

तत्राश्रमे शिवं दृष्टवा लोधेश्वर दर्शन कृताः।।

तस्य पूर्या समागम्य लोधि वसन्ति सेवकाः।

शरणं पुनः रेवता वुभो शरणनान्य दतेम देवता।।।

'उन्होंने बताया':

अहम् च सर्वे शिव मार्ग तत्पराः न वैष्णवो मान कृताः।

स्वपूर्या शरणं तरुणेन्दुशेखरः शरणं वे गिरराज कन्यका।।

हे पितामह एक दिन नर्मदा के किनारे विचरते हुए मुझे वहाँ लोध लोग मिले जो लोधेश्वर की आराधाना में व्यस्त हैं। उन्होंने मुझे बताया कि वे वैष्णवों का मान नहीं करते बल्कि शिव भक्ति ही उनका लक्ष्य है।

लोध, क्षत्रियों कि एक ऐसी शाखा है, जिसे मूलतः चन्द्रवंश्यिों से जोड़कर देखा जाता है। बाद के कुछ विद्वानों ने लोध को 'अग्नि' कुल से जोड़ कर भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया था जो की सरासर गलत है, क्यूंकि लोध एक गुण है जो सिर्फ युद्ध कौशल, युद्ध क्षमता, युद्ध दृढता व युद्ध बुद्धिमता से जोड़ा जा सकता है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण वजह है, 'प्रथम वेद-ऋग्वेद'। जिसके पांचवे भाग के 53वे सूत्र का 23वा मंत्र, जिसमें व्याख्याता "लोध" शब्द के गुण का तो उल्लेख कर रहा है किन्तु, उसे किसी कुल विशेष से जोड़कर नहीं देखा जा रहा है। ऋग्वेद धरती पर मौजूद ग्रंथों में सर्वाधिक प्रमाणिक व प्रचीन है।

"लोध" के एक जातीय स्वरुपिक इतिहास को समझने के लिए वेदों व पुराणों का ज्ञान अतिआवश्यक है। वैदिक काल में क्षत्रियों के दो कुल थे। जिनका आरम्भ परमपिता ब्रह्मा से होता है- सूर्य वंश व चन्द्र वंश । सम्भवतः उनको अपने नाम पृथ्वी के अतिरिक्त आसानी से दिखने वाले दो भौगोलिक पिण्डों से मिले होंगे। वैदिक काल के आरम्भ से ही चन्द्र वंश ने भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था और ये आधिपत्य इस कदर था कि, चन्द्र वंशीय राजा बुद्ध ने अपने समकालीन सूर्यवंशी राजा की पुत्री इला से विवाह अपहरण करके किया (उस समय की प्रचलित व मान्यता प्राप्त विवाह पद्धतियों में से एक)। यद्धपि उस काल में भी विवाह मूलत: अपने कुल में ही किया जाता था जिसका उदाहरण हमें सीता स्वयंवर में मिलता है। ये वो काल था, जब वर्ण व्यवस्था तो थी, पर

सहज थी। कर्म के अनुसार वर्ण तय होता था। मनुष्य अपने कर्म के आधार पर एक वर्ण से दूसरे वर्ण में आ जा सकते थे। यहाँ पर ऐसे भी उदाहरण हैं कि, सूर्य वंश की बेटियाँ चन्द्रवंश में और चंन्द्रवंश की बेटियाँ सूर्यवंशी राजाओं के साथ विवाहित हुई। इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, चंद्रवंशीय राजा अनु की 11वी पीढ़ी के राजा कैकय की पुत्री कैकयी का विवाह सूर्यवंशी इक्ष्वाकु के वंशंज राजा दशरथ से हुआ। परन्तु श्री राम व माता सीता के विवाह तक दौनों वंशों के बीच की दूरी इतनी गहन हो चली थी कि माता सीता के स्वयंवर में राजा जनक जो एक सूर्यवंशी राजा थे, को स्वयंवर में उपस्थित सभी राजाओं व युवराजों से अपने वंश सहित परिचय देने का आग्रह करना पड़ा। इस समय तक चंद्रवंशी राजाओं की शक्ति क्षीण हो चुकी थी या फिर उनके राज्य पूरी तरह नष्ट हो चुके थे। और इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण परशुराम और चन्द्रवंशियों के बीच हुआ युद्ध था। युद्ध में चन्द्रवंशियों ने या तो सूर्यवंशियों का अधिपत्य स्वीकार्य कर लिया या उनका नाश हो गया।

वैसे तो यह वैमनस्यता (सूर्य व चन्द्र वंशो में) पृथ्वी पर अधिकार के लिए (संमभवतः) वंशों के उदय काल से ही थी, किन्तु इसने विकराल रूप परशुराम के इसमें कूदने के बाद ही लिया। ऐसा मन्तव्य है कि, परशुराम भगवान विष्णु के छठे अवतार थे। जिन्हें पृथ्वी पर क्षत्रियों के बढ़ रहे अत्याचारों को समाप्त करने के लिए अवतरित किया गया था। और इस कार्य में उन्हें उकसाने का प्रयास उस समय के सर्वाधिक प्रतापी सम्राट सहस्त्रबाहु अर्जुन ने, परशुराम के पिता को अपमानित कर किया।

परशुराम, एक मुनि पिता व क्षत्राणी (सूर्यवंशी) माता के 5 पुत्रों में सबसे छोटे थे। वे अति-शक्तिशाली प्रतापी व ज्ञानवान तो थे ही साथ ही पिता के सर्वाधिक आज्ञाकारी पुत्र भी थे। कहा जाता है कि, एक बार परशुराम की माता यज्ञ कार्य के लिए नदी से जल भरने गयी, और नदी में गंधर्वो की जल क्रीड़ा को देखकर मुग्ध हो गयी। काफी समय पश्चात जब गंधर्वो की जल क्रीड़ा समाप्त हुई तो वे चेतन अवस्था में आकर, जल लेकर आश्रम पहुँची तो यज्ञ समाप्त हो चुका था। क्रोधित मुनि जमदग्नि ने अपने सभी पुत्रों से (क्रमवार) इस कार्य के लिए अपनी माता का वध करने के लिए कहा। सभी पुत्रों ने मना कर दिया। किन्तु परशुराम ने अपने पिता की आज्ञा का अनादर न करते हुए, अपने फरसे से प्रहार कर अपनी माता का सिर धड़ से अलग कर दिया। पिता ने प्रसन्न होकर पुत्र परशुराम से वर माँगने को कहा। तब उन्होंने अपनी माता को पुनः जीवित करने व माता और भाइयों के क्षमादान को अपने वरदान के रूप में माँगा। साथ ही उन्होंने यह भी वर में माँगा कि उनके द्वारा किया गया यह कृत्य उनकी माता व भाइयों को स्मरण न रहे।

कार्तवीर्य अर्जुन जिनका सम्बन्ध पुराणों के अनुसार चन्द्रवंश की एक शाखा "हैहय वंश" से माना जाता है, उस समय के सर्वाधिक प्रतापी राजा थे। कार्तवीर्य ने अपनी राजधानी माहिष्मति जो कि, आज का आधुनिक महेश्वर है, में शिव की घोर आराधना कर सहस्त्रबाहु होने का वरदान प्राप्त किया था, जिसकी वजह से उन्हे सहस्त्रबाहु अर्जुन भी कहा गया है।

श्रीमद्भगवत महापुराण के अनुसार सहस्त्रबाहु अर्जुन इतने शक्तिशाली व पराक्रमी थे कि, एक बार अपनी स्त्रियों के साथ नमर्दा में जलक्रीड़ा करते वक्त स्त्रीयों को अपनी शक्ति व पराक्रम दिखाने के लिए अपनी सहस्त्र भुजाओं से माहिष्मति में नर्मदा के वेग को रोक दिया। जिससे नर्मदा के जल की धार उल्टी बहने लगी। उसी समय लंका-पति रावण का शिविर भी नर्मदा के तट पर कुछ ही ऊपर लगा हुआ था। नमर्दा की धार उलटी बहने के कारण रावण क शिविर जलमग्न हो गया। क्रोधित रावण ने वहाँ पहुँचकर

सहस्त्रबाहु को बुरा-भला कहा और खुद के साथ मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। सहस्त्रबाहु ने रावण को अपनी भुजा में दबोच लिया और अपनी राजधानी माहिष्मती के कारागार में डाल दिया। कुछ वर्षों पश्चात महर्षि 'पुलस्त्य' के कहने पर सहस्त्रबाहु ने रावण को मुक्त किया।

इस समय तक राम नाम के पुत्र भृगुवंशीय ऋषि-जमदग्नि व क्षत्रीय सूर्यवंशी माता रेणुका की पाँचवी संतान के रूप में जन्म ले चुके थे। जिन्हें पृथ्वी पर भगवान विष्णु के दस-अवतारों में से छठे (अंश अवतार) के रूप में देखा जाता है। राम, जन्म से ब्राह्मण व स्वभाव से क्षत्रिय था। उनके जन्म के बारे में एक महत्वपूर्ण कथा का उल्लेख पुराणों में मिलता है।

गाधि नामक महाबली राजा संन्तान न होने के कारण वन में अपनी रानी के साथ तपस्या के लिए पधारे। वन में प्रवास के दौरान रानी गर्भवती हुई और पुत्री(सत्यवती) को जन्म दिया, किन्तु, वंश और राज्य धर्म निर्वाहन के लिए राजा गाधि को पुत्र संतान की आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने वहीं रहने का निश्चय किया। उस समय वन में 'सत्यवती' ने भृगु पुत्र मुनि ऋचीक का वरण किया। पुत्र के विवाह के विषय में जान कर मर्हिषी भृगु अपनी पुत्रवधु को आशीर्वाद देने पहुँचे। आशीर्वाद स्वरूप सत्यवती ने भृगु मुनि से अपनी माता के लिए पुत्र की इच्छा व्यक्त की । मुनि ने पुत्रवधु को ब्राह्मण पुत्र व उसकी माता के लिए क्षत्रीय पुत्र होने का आशीर्वाद दिया। किन्तु दौनों स्त्रियों ने पुत्र प्राप्ति के अपने उपायों का प्रयोग भूलवश उलट कर लिए। जब उन्हें इस बात का ज्ञान हुआ तो उन्होंने मुनि भृगु से इसे वापस करने के लिए कहा। तब मुनि भृगु ने अपने तप से इस वर को अगली पीढ़ी के लिए आन्तरित कर दिया। जिससे उस पीढ़ी में तो वे जैसे पुत्रों की कामना कर रहे थे, वैसा हुआ किन्तु अगली पीढ़ी में भृगु वंश में क्षत्रीय बालक ने जन्म लिया जो परशुराम कहलाए।

एक बार कार्तवीर्य अर्जुन वन में आखेट के समय भुख-प्यास से व्याकुल हो गए और भोजन व जल की तलाश में जमदग्नि मुनि के आश्रम में जा पहुँचे। सहस्त्रबाहु ने मुनि को अपनी समस्या बताई। मुनि ने अपने आश्रम में सहस्त्रबाहु व उनके साथ उपस्थित सैकड़ों लोगों के भोजन की व्यवस्था तुरन्त कर दी। सहस्त्रबाहु को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि वन में व्यवस्था के अभाव में भी मुनि के आश्रम में भिन्न प्रकार का स्वादिष्ट, वैभवशाली भोजन कैसे सम्भव हो पाया? सहस्त्रबाहु ने मुनि के मुख से 'अन्नपुर्णा कामधेनु' के उनके आश्रम में होने के विषय में सुना तो, उन्होने उसे पाने की इच्छा व्यक्त की। किन्तु मुनि ने उनके आग्रह को ठुकरा दिया। शिवर लौटने पर उन्होंने विचार किया कि अगर कामधेनु उनके पास आ जाती है तो उनकी प्रजा की अन्न की समस्या सदैव के लिए मिट जाएगी। और साथ ही रण के समय उनकी सैना की भी। अगले दिन वे फिर मुनि आश्रम पहुँचे और अपना आग्रह दोहराया, पर मुनि अपनी बात पर अटल रहे। तब सहस्त्रबाहु ने बलपूर्वक अन्नपूर्णा कामधेनु का हरण कर लिया। उन्होने न केवल कामधेनु का हरण किया बल्कि मुनि आश्रम को भी तहस-नहस कर दिया। इस समय तक 'राम' घोर तपस्या कर शिव से वर स्वरूप फरसा प्राप्त कर चुके थे। तपस्या कर जब वे आश्रम लौटे तो मुनि पिता के लाख मना करने पर भी उन्होंने

अपने पिता के अपमान का बदला लेने व कामधेनु को वापस लाने का मन बना लिया। वे जानते थे कि सहस्त्रबाहु उन्हे आसानी से कामधेनु वापस नहीं करेगें इसलिए उन्होने माहिष्मति पहुँच कर सहस्त्रबाहु को युद्ध के लिए ललकारा। इस युद्ध में परशुराम ने न केवल सहस्त्रबाहु का वध किया बल्कि भगवान

शिव द्वारा वरदानित फरसे से सहस्त्रबाहु कार्तवीर्य अर्जुन की सहस्त्र भुजाओं को भी शरीर से अलग कर दिया।

अन्नपूर्णा कामधेनु को लेकर परशुराम जब अपने पिता के आश्रम पहुँचे तब पिता मुनि जमदग्नि सब जानकर बहुत दुखी हुए। उन्होने अपने पुत्र को समझाया कि एक "सार्वभौम" राजा का वध ब्राह्मण हत्या से भी बड़ा है। उन्होंने परशुराम को अपने पापों से मुक्त होने के लिए एक वर्ष की तपस्या करने व सभी तीर्थों (उस समय के) के भ्रमण की आज्ञा दी।

इधर सहस्त्रबाहु अर्जुन का जेष्ठ पुत्र जब अपने पिता के वध का समाचार सुन कर माहिष्मति पहुँचा तो क्रोध वश उसने सेना लेकर जमदग्नि के आश्रम को तहस-नहस किया और साथ ही जमदग्नि के साथ ही परशुराम के अन्य भाइयों का वध भी किया।

तीर्थ से लौटे परशुराम ने सूर्यवंशी सेना के साथ मिलकर एक बार फिर माहिष्मति पर आक्रमण किया। क्रोधित परशुराम से बचने के लिए सहस्त्रबाहु के 10 हजार से अधिक पुत्र अलग-अलग दिशाओं में गए। उनका पीछा करते हुए परशुराम ने धरती को बार-बार क्षत्रीय विहीन किया। वे उन सभी क्षत्रियों का वध करते गए जिन्होंने सहस्त्रबाहु के पुत्रों को शरण दी। इसमें अधिकांश चन्द्रवंशीय राजा थे। सहस्त्रबाहु के पुत्र जो कि लोध गुण सम्पन्न माने जाते थे अलकापुरी पहुँचे जहाँ पर उन्होंने घोर तपस्या कर भगवान शिव को प्रसन्न किया। भगवान प्रकट हुए तब शिव ने परशुराम के ताप से बचाने के लिए उन्हें गण बन जाने की आज्ञा दी। सभी 'लोध' गुण क्षत्रिय जनेऊ व शस्त्र को तज कर, शरीर पर भस्म लगा कर शिव गणों में शामिल हो गए। परशुराम अपने पिता व भाइयों के वध से इतने क्रोधित थे कि उन्होने सहस्त्रबाहु कार्तवीर्य अर्जुन के पुत्रों को खोजने के लिए सम्भवतः सारे भारतीय उपमहाद्वीप का भ्रमण किया। इस बात के प्रमाण गर्ग संहिता, शिव पुराण, भृगु संहिता उत्तर भाग व स्वंय परशुराम संहिता में मिलता है। जब परशुराम सहस्त्रबाहु के लोध गुणी पुत्रों को खोजते हुए माक्रण्डे ऋषि के आश्रम पहुँचे तो उन्हे वहाँ पता चला कि एक बार गर्गाचार्य ने माक्रण्डे ऋषि से कहा था कि

शाम्भवं धर्माश्रित नान्यों देव उपासकाः।

सर्वे शिव गणः प्रोक्कता लोध नामक क्षत्रियां।

कृषि धर्म समापन्नाः शस्त्र विद्यां न धारयेतः।

तदा काले भवेतु येव कृषि धर्मरतः परम्:।।

उन्होंने बताया कि शिवपुरी के लोधी शैव भक्त है, वे किसी अन्य देव की उपासना नहीं करते। उन्होंने अब शस्त्रों को त्याग दिया है और वे अब कृषि को ही अपना धर्म समझते हैं।

इससे परशुराम का यह विश्वास पक्का हो गया कि धरती पूर्णतः क्षत्रिय विहीन नही हुई है। इसलिए उन्होने शिवपुरी जाने का निश्चय किया। इसका प्रमाण हमें शिव पुराण में मिलता है। परशुराम जब शिवपुरी के रास्ते में शिव पुत्र कार्तिकेय के स्थान पर पहुँचते हैं तो वार्तालाप के दौरान कार्तिकेय ने उन्हें बताया कि उनके पिता भगवान शिव ने उनसे कहा था (जब वे शिवपुरी गए थे) कि

लोध पूर्या जनाः सर्वे लोध नामक क्षत्रिया।

लोधेश्वर इति भाषितः लोधी नाम भविष्यति।। (भविष्य पुराण अध्याय 15)

इनसे ये बात तो स्पष्ट हो जाती है कि सहस्त्रबाहु के पुत्र, शिव की शरण में गए और उनका पीछा करते परशुराम भी शिवपुरी पहुँचे। पीछा करते परशुराम को लोध गुण क्षत्रियों के शिव पुरी में होने के प्रमाण स्वंय शिव पुत्र कार्तिकेय व माक्रण्डे ऋषि से मिले। परशुराम को जब यह स्पष्ट हो गया कि सहस्त्रबाहु के पुत्र शिवपुरी में हैं, तब वे शिवपुरी पहुँचे इस का प्रमाण अत्रि संहिता उत्तर भाग श्री परशुराम विजय अध्याय-34, पश्चिम यात्रा भृगुवाच में मिलता है।

राजवन्शे महत्कष्टमुपस्थित मितिद्रुतम्।

गत्वा पालयिता युद्धात्श लोधेशरणं गताः।।

लोधि पूजयन्तों तेषा हनन कम्पया।

द्रष्ट्या प्रवीन महादेवो मैव प्रकुरू भागव।।

अन्यथा भस्मतां नूनं गमिष्यति धश्त वश्त।

लोधिनः क्षत्रीया सर्वे मत्सेवा न पारायण।।

येते मत्शरणं प्रप्ता निज प्राणाभिरक्षया।

मुञ्चवे राम बन्धत्व गच्छ शीघ्र यथा गताः।

भद्राज्ञया पुनश्चैते निवसन्तु मदन्तिके।।

परशुराम ने ऋषि अत्रि को शिवपुरी से लौट कर बताया कि जो क्षत्रिय मुझ से भयभीत होकर यहाँ आ छिपे थे वे अब निडर हो गए हैं। और स्वंय शिव उनके रक्षक हो गए हैं। उन्होने मुझे मेरे प्राणों का भय दिखा कर मुझे वहाँ से चले जाने के लिए कहा। उपरोक्त श्लोक से ये भी ज्ञात होता है कि शिव ने भृगु वंशज को लोधियों के हाथ लगाने की दृष्टि में भस्म कर देने की चेतावनी तक दे डाली थी। यही नहीं शिव परशुराम द्वारा शिव शरणागतों पर शिवपुरी में बल दिखाने पर इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने तुरन्त परशुराम को शिवपुरी से जाने के लिए कह दिया।

इससे एक बात तो यह स्पस्ट होती है कि सहस्त्रबाहु के पुत्र भी लोध गुणी क्षत्रिय थे जो परशुराम के आक्रमण की वजह से शिवपुरी पहुँचे और उनके गण बन गए। साथ ही एक और महत्वपूर्ण बात यह साबित होती है कि परशुराम धरती को पूर्णतहः क्षत्रिय विहीन नहीं कर पाए क्योंकि वे उन क्षत्रियों को छू भी नहीं सके जो शिव की शरण में थे। किन्तु एक दूसरी दृष्टि से देखा जाए तो परशुराम अपने मकसद में कामयाब भी हो गए थे क्योंकि, भगवान शिव की शरण में जाने के पश्चात उन्होने अपने शस्त्रों को त्याग दिया था। और शस्त्र न होने पर एक क्षत्रिय-क्षत्रिय न रहकर सामान्य पुरुष बन जाता है। भगवान शिव ने लोध गुणी क्षत्रीयों को अपना गण बन जाने के पश्चात आजीविका हेतु कृषि कर्म अपनाने के निर्देश दिए। इसका प्रमाण हमें गर्ग संहिता माक्रन्डे प्रति मध्य भाग अध्याय-51 श्लोक-82 से मिलता है। स्वंय परशुराम, परशुराम संहिता प्रहस्त सम्वाद अध्याय-82 श्लोक-19 पृष्ठ 309 पर कहते हैं

ये आहवे क्षत्रण नावलोकिताः मया ते शंकरः पातु स्वकीय दासः।

ते गुप्त क्षत्रीयाः भव एव लोधी मुक्त्वोपवीतं कृर्षिकर्म तत्पराः।।

परशुराम अपने आश्रम में प्रहस्त मुनि से चर्चा के दौरान उन्हें बताते हैं कि है मुनि राज ! जिन क्षत्रियों को मैंने युद्ध में पराजित किया था, वे अब शंकर की शरण में चले गए हैं। उन गुप्त क्षत्रिय लोधियों ने यज्ञोपवीत से मुक्त हो कर कृषि को अपना धर्म मान कर अपना लिया है।

उपरोक्त श्लोक से दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली की लोध गुणी क्षत्रियों ने शिव गण बन जाने के पश्चात कृषि को अपनी आजीविका के लिए अपना लिया। वे भारतीय उप महाद्वीप में पूरब से पश्चिम तक व उत्तर से दक्षिण तक फैल गए और सम्भवतः वहाँ के निवास करने वाली अन्य जातियों के साथ मिश्रित भी हुए होंगे।

दूसरी यह कि गुप्त वंशीय क्षत्रियों की शाखा भी कालांतर में उन्हीं लोध गुणी क्षत्रियों से उदय हुई जो आपत्ती काल में परशुराम के कहर से बचने के लिए पहले शिवपुरी में उनके गण बन गए और बाद में कृषि कर्म को अपनी जीविका के रूप में अपना कर भारतीय उप महाद्वीप के एक कोने से दूसरे कोने में विस्तारित हो गए। इनमें से जिनमें क्षत्रिय बनने की काबीलियत थी उन्होंने छोटे और बाद में बड़े राज्य स्थापित किए और बाकी सभी कृषि कर्म को अपनाते रहे।

परमपिता ब्रह्मा के मानस पुत्र सन्त कुमार द्वारा रचित ग्रंथ संत कुमार संहिता के अध्ययन के उपरान्त एक महत्पूर्ण प्रमाण मिलता है। संत कुमार लिखते हैं।

ब्रह्माव्रती एकदा नर्मदा तीरे विचरन्ति पितामह!

तत्राश्रमे शिवं दृष्टवा लोधेश्वर दर्शन कृताः।।

तस्य पूर्या समागम्य लोधि वसन्ति सेवकाः।

शरणं पुनः रेवता वुभो शरणनान्य दतेम देवता।।

अर्थ- हे परम पिता एक दिन नर्मदा के किनारे विचरते हुए में एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचा, जहाँ मुझे शिव के लोधेश्वर स्वरूप में दर्शन हुए। उस आश्रम का पूरा कार्य लोधि सेवक देखते हैं और वहाँ उनके अलावा किसी अन्य देवता की प्रतिमा मैने नहीं देखी । उन्होंने मुझे बताया कि

अहम् च सर्वे शिव मार्ग तत्पराः न वैष्णवो मान कृताः।

स्वपूर्या शरणं तरुणेन्दुशेखरः शरणं वे गिरराज कन्यका।।

अर्थ- हम सभी शिव भक्ती मार्ग पर तत्पर हैं। हम शिव के अतिरिक्त किसी को (वैष्णवों) मान नहीं देते । हम सभी आदिकाल से शिव की शरण में हैं किसी और के शराणागत नहीं होते।

इस काल तक सनातन धर्म पद्धिति में दो अलग-अलग पंथों का उदय हो चुका था। इन दोनों (शैव व वैष्णव) ही पंथों के लोग अपने देवता के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा-अर्चना नहीं करते थे। चुंकि लोध गुणी क्षत्रियों को शिव ने आश्रय दिया था। इस लिए संभवतः वे सभी कालान्तर में शैव भक्त ही कहलाए।

अगर हम कालान्तर में लोधियों से उदय हुए क्षत्रियों पर नजर डालेंगे तो पाएगे की एक दो को छोड़कर सभी शिव भक्त ही थे।

एक गोपिका के मुख से कृष्ण अवतार की बात सुनकर परशुराम ने अस्त्र त्यागने का फैसला किया। सम्भवतः इस समय तक लोधी या लोध गुण क्षत्रिय या तो शिवपुरी में ही रहे या फिर शिवपुरी के आसपास के इलाकों में कृषि कार्य में तत्पर रहे। साथ ही इस समय में ही उन्होने शिव भक्ती में रमते हुए भारत की दो प्रमुख नदियों के किनारे लोधेश्वर महादेव के नाम से दो लिंगों की स्थापना की जिनमें से एक नर्मदा के किनारे स्थित था। जिसका प्रमाण हमें सन्त कुमार संहिता में मिलता है साथ ही दुसरा आज के बाराबंकी जिले में रामनगर तहसील के महादेवा गाँव में घाघरा नदी के किनारे स्थित है। यह पृथ्वी पर मौजूद शिव की 52 शिवलिंगों में से एक है। महाभारत में कई स्थानों पर इसका उल्लेख है। इससे जुड़ी कई गाथाओं में से एक यह है कि, महाभारत काल में स्वंय माता कुन्ती ने अपने पुत्रों की दीर्घ-आयु के लिए यहाँ शिवलिंग की पूजा की। जब वे पूजा कर रही थीं, तभी भविष्यवाणी हुई कि, उनकी ये पूजा तब तक अधूरी है, जब तक वे शिव लिंग पर सवा-लाख पारिजात पुष्प न अर्पित करें। तभी शिव प्रसन्न होंगे व उनकी मनोकामना पूर्ण करेंगे। उस समय पारिजात वृक्ष सिर्फ इन्द्रपुरी में ही था। माता कुन्ति की व्याकुलता को देखते हुए अर्जुन ने अपने बाहुबल पर पारिजात वृक्ष को स्वर्ग से लाकर लोधेश्वर महादेव के प्रांगण के समीप स्थापित किया। जिससे माता कुन्ति ने अपनी पूजा पूर्ण की। कहा जाता है कि यह इस व्रत-पूजा का ही परिणाम था कि कुन्ति के पाँचों पुत्र महाभारत के युद्ध में क्षति रहित विजयी रहे। महाभारत युद्ध के पश्चात पाण्डवों ने भी यहाँ पर विश्व शान्ति के लिए महायज्ञ किया । महायज्ञ के लिए बनाएं कुण्ड आज भी लोधेश्वर महादेव प्रांगण में मौजूद है। जिसे पांडव कुण्ड के नाम से जाना जाता है।

द्वापर काल तक लोध क्षत्रियों के क्षत्रपों के रूप में उभरने के उदाहरण नहीं के बराबर है। किन्तु महाभारत (वेद वयास द्वारा रचित) युद्ध के दौरान एक बार पुनः लोध गुणी क्षत्रियों की युद्ध कुशलता की चर्चा होती है, तब दर्योधन (कौरव कुमार) अपने सेना के मध्य में लोध गुणी क्षत्रियों को रखने की बात कहता है। ये लोध गुणी क्षत्रिय किस क्षत्रप के साथ आए यह प्रमाणित नहीं है किन्तु, सम्भवतः ये क्षत्रिय या तो मथुरा की सैना से होंगे जिसे दुर्योधन ने कृष्ण या सेना में से किसी एक को चुनने की zस्थिती में सेना को चुना। अथवा ये गांधार नरेश की सेना होगी जो कौरवों की ओर से लड़ने के लिए महाभारत युद्ध में शामिल हुयी।

चन्द्रवंशीय लोधी क्षत्रिय राजवंशावली

प्राचीन राजवंशावलियों के ज्ञान के सबसे बड़े स्रोत्र पुराण भागवत आदी भिन्न भिन्न धार्मिक ग्रंथों में कहीं न कहीं कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य पाई जाती है। कहीं कहीं नामों की भी भिन्नता मिलती है, कहीं कुछ नामों को ही छोड़ दिया गया है। दत्तक पुत्रों के रुप में राजाओं के कारण भी भिन्नता आ गई है। पाठक ध्यान रखें की राजवंशावलियों में केवल उत्तराधिकारी राजाओं की भी वंश वृद्धि प्रदर्शित की गई है। ऐसी स्थिति में प्राचीन काल की वंशावली के विषय में आज के युग में निर्णायक मत पर पहुंचना एकदम असंभव है फिर भी यथासंभव निम्नांकित वंशावली को शुद्ध रुप देने का प्रयास किया गया है।

चन्द्रवंशी क्षत्रिय राजवंशावली
(लोधी क्षत्रिय वंश वृक्ष)

ब्रह्मा
↓

अत्रि → समुद्र → चन्द्र → बुद्ध → पुरखा → आयु → नहुष → यथाति

चन्द्र इसी राजा से चन्द्र वंश की उत्पत्ति हुई। एक वंशावली में अत्रि का पुत्र समुद्र और समुद्र का पुत्र चन्द्र(सोम) लिखा है।

महाराजा बुद्ध का सूर्य पौत्री ईला से विवाह हुआ। बुद्ध ने लोधी गुण के आधार पर बुद्ध संतान क्षत्रिय जाति की एक शाख बौद्ध कहलाई।

अपनी तपस्या से इन्द्र पड़ इसी नहुष से प्राप्त किया

मरिचि → कश्यप → सूर्य → वैवश्तमनु → इक्ष्वाकु

नरसिंह पुराण में ब्रह्मा का पुत्र दक्ष, दक्ष का पुत्र स्वयंभुमनु और स्वंयभुमनु का पुत्र अत्रि और मरिचि कश्यप लिखें है। ब्रह्मा के 9 पुत्र थे।

इसी राजा से सूर्यवंश चला। सूर्य का नाम विवश्वान भी था।

आदि 10 पुत्र तथा ईला नाम की एक कन्या इसी वंश में आगे चलकर सगर रघु और रामराजा हुए।

यथाति के पुत्र:

द्रहयु — इस वंश का अन्तिम राजा सुमानु हुआ

अनु — अनु की 11 वीं पीढ़ी पर कैकयी राजा हुआ। जिसकी पुत्री कैकयी दशरथ को ब्याही गई थी।

पुरु → जनमेजय → प्रचिन्वान → प्रवीर → मनस्यु

तुवंसु — इस वंश का अन्तिम राजा गान्धार हुआ जिसकी पुत्री गान्धारी धृतराष्ट्र को ब्याही गई थी। तुवंसु के नाम पर ही तोमर क्षत्रियों की उत्पत्ति हुई

यदु — यदु से यदुवंश की उत्पत्ति हुई। यदु की 52 वीं पीढ़ी पर अन्तिम राजा कंस हुआ। इसी कुल में कृष्ण का जन्म हुआ।

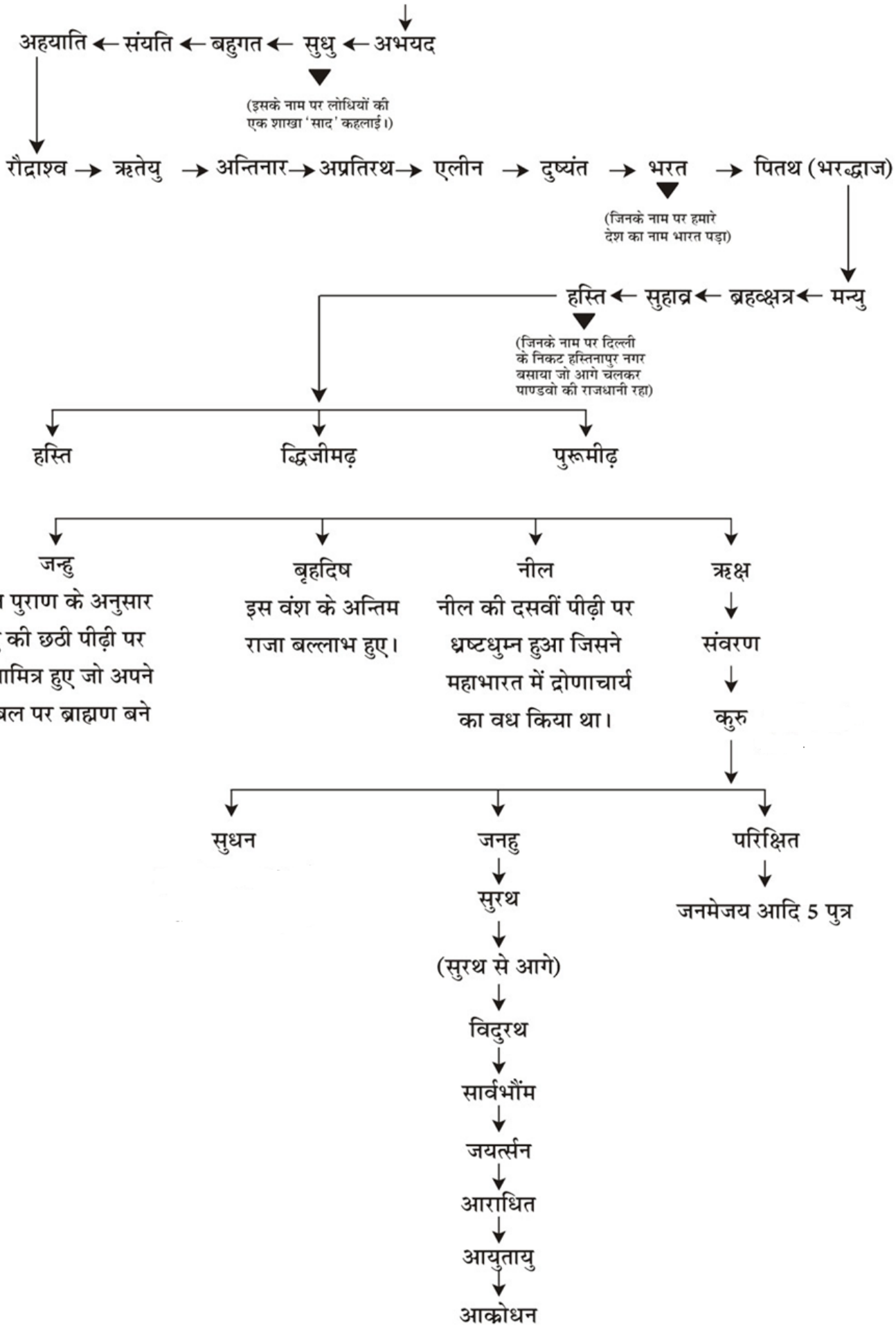
अहयाति ← संयति ← बहुगत ← सुधु ← अभयद
(इसके नाम पर लोधियों की एक शाखा 'साद' कहलाई।)
रौद्राश्व → ऋतेयु → अन्तिनार → अप्रतिरथ → एलीन → दुष्यंत → भरत → पितथ (भरद्धाज)
(जिनके नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा)
हस्ति ← सुहात्र ← ब्रहक्षत्र ← मन्यु
(जिनके नाम पर दिल्ली के निकट हस्तिनापुर नगर बसाया जो आगे चलकर पाण्डवो की राजधानी रहा)
हस्ति
द्विजीमढ़
पुरूमीढ़
जन्हु
अग्नि पुराण के अनुसार जन्हु की छठी पीढ़ी पर विश्वामित्र हुए जो अपने तपोबल पर ब्राह्मण बने
बृहदिष
इस वंश के अन्तिम राजा बल्लाभ हुए।
नील
नील की दसवीं पीढ़ी पर धृष्टधुम्न हुआ जिसने महाभारत में द्रोणाचार्य का वध किया था।
ऋक्ष
संवरण
कुरु
सुधन
जनहु
सुरथ
(सुरथ से आगे)
विदुरथ
सार्वभौंम
जयत्सेन
आराधित
आयुतायु
आक्रोधन
परिक्षित
जनमेजय आदि 5 पुत्र

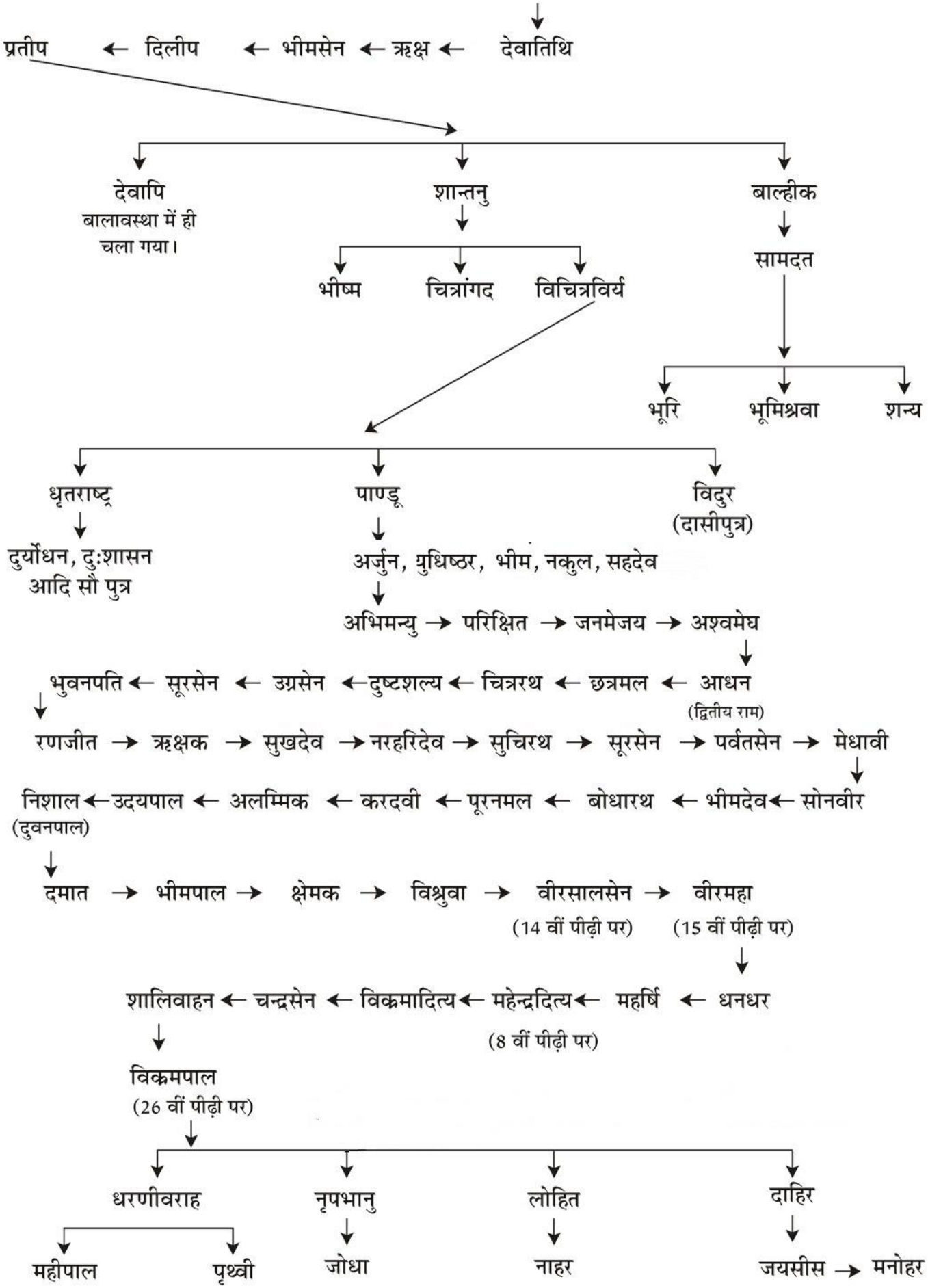
देवातिथि
ऋक्ष
भीमसेन
दिलीप
प्रतीप
देवापि
बालावस्था में ही चला गया।
शान्तनु
बाल्हीक
भीष्म
चित्रांगद
विचित्रविर्य
सामदत
भूरि
भूमिश्रवा
शन्य
धृतराष्ट्र
पाण्डू
विदुर
(दासीपुत्र)
दुर्योधन, दुःशासन आदि सौ पुत्र
अर्जुन, युधिष्ठर, भीम, नकुल, सहदेव
अभिमन्यु → परिक्षित → जनमेजय → अश्वमेघ
आधन
(द्वितीय राम)
छत्रमल ← चित्ररथ ← दुष्टशल्य ← उग्रसेन ← सूरसेन ← भुवनपति
रणजीत → ऋक्षक → सुखदेव → नरहरिदेव → सुचिरथ → सूरसेन → पर्वतसेन → मेधावी
सोनवीर ← भीमदेव ← बोधारथ ← पूरनमल ← करदवी ← अलम्मिक ← उदयपाल ← निशाल
(दुवनपाल)
दमात → भीमपाल → क्षेमक → विश्रुवा → वीरसालसेन → वीरमहा
(14 वीं पीढ़ी पर)
(15 वीं पीढ़ी पर)
धनधर ← महर्षि ← महेन्द्रदित्य ← विक्रमादित्य ← चन्द्रसेन ← शालिवाहन
(8 वीं पीढ़ी पर)
विक्रमपाल
(26 वीं पीढ़ी पर)
धरणीवराह
नृपभानु
लोहित
दाहिर
महीपाल
पृथ्वी
जोधा
नाहर
जयसीस → मनोहर

अध्याय 3 - गोहद युद्ध के रणबाँकुरे

हिल गया गोहद का सिंहासन, बने भदावर की ढाल,

एक थे धुआँराम लोधी जी, दूजे परमेश्वरी लाल

यह बात लगभग सन् 1708 की है । जब मुगलकालीन भारत देश में मुगल बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद बहादशाह बहादुर शाह जफर प्रथम का शासन था । भारत देश छोटी-बड़ी सैकड़ों रियासतों में विभाजित था। भदावर राज्य पर राजा महेन्द्र गोपाल सिंह जी भदौरिया शासन कर रहे थे। भदावर राज्य लगभग 12000 वर्ग किलोमीटर की सीमा तक फैला हुआ था।

राजा महेन्द्र गोपाल सिंह जी बड़े ही न्यायप्रिय और कुशल रणनीतिकार शासक के रूप में प्रसिद्ध थे। इनकी उपाधि **भदावर सैनिक-उम-ऐ-उज्जम महाराजाधिराज** थी। भदावर राज्य की राजगद्दी पर आसीन होने से पहले भदावर राजा ने इन्हें 1707 में नरवर का राज्यपाल नियुक्त किया गया था राजा महेंद्र गोपाल सिंह भदौरिया जी राज्य के हर वर्ग, जाति और धर्म के लोगों के बीच अपनी गहरी पैठ जमाए हुए थे।

राजा महेन्द्र गोपाल सिंह जी राज्य की सुरक्षा - व्यवस्था के प्रति बेहद सतर्क रहते थे। इनके शासन में प्रजा एवं राज्य की सुरक्षा के कड़े इन्तजाम थे। राजा महेन्द्र गोपाल सिंह भदौरिया जी वीरों का बहुत सम्मान करते थे। यही कारण था उनका दरबार वीर योद्धाओं से सुसज्जित था। इन्हीं वीरों में एक वीर थे धुआँराम लोधी जी। धुआँराम लोधी भदावर राज्य में सेनापति के पद पर आसीन थे।

किवदन्तियों के अनुसार माना जाता है कि सेनापति धुआँराम लोधी जी मूलरुप से नरवर राज्य के थे। जब महेन्द्र गोपाल सिंह भदौरिया जी नरवर राज्य के राज्यपाल थे तब वह धुआँराम जी को अपने साथ ले आए और अपने राज्य का सेनापति नियुक्त किया।

इसी समय एक अन्य राज्य भी था। यह भदावर राज्य और ग्वालियर राज्य के मध्य था। इसका नाम गोहद था। गोहद जाट राज्य था। गोहद राज्य पर शासन करने वाले जाट मूलरुप से धौलपुर, राजस्थान के थे। गोहद राज्य पर अभी तक किसी का भी स्थायी अधिकार नहीं हो पाया था। गोहद पर इस समय जाट राजा भीम सिंह राणा का शासन था।

राजा भीम सिंह राणा बहुत ही शक्तिशाली राजा थे। उनके शक्तिशाली होने की प्रमुख वजह थी। गोहद का किला। जो बहुत बड़ा था एवं सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। यह तीन फुट मोटी और लगभग 30 फुट ऊंची चाहरीदीवार के लिए प्रसिद्ध था। यह किला तीन ओर से सिन्ध नदी से घिरा था। इसके मुख्य द्वार बहत ऊँचे और दरवाजों में बड़े और मोटे कीले लगे थे। जिन्हें तोड़कर किले के अन्दर प्रवेश करना अत्यधिक कठिन कार्य था। गोहद राज्य की भूमि बहुत ही उपजाऊ थी।

जैसा कि सदैव से होता आया है कि राजाओं में अपने-अपने राज्य की सीमाओं की सुरक्षा एवं विस्तार की भूख सी रहती है। भदावर राजा भी गोहद के किले पर अपना स्थायी परचम लहराने के लिए एक अवसर की तलाश में थे। अन्त में वो अवसर आ ही गया।

इसी क्रम में अचानक भदावर राजा महेन्द्र गोपाल सिंह भदौरिया एवं गोहद राजा भीम सिंह राणा के बीच राज्यों की सीमा को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया और माना जाता है कि राजेरजवाड़ों के विवाद आसानी से नहीं सुलझते। ठीक उसी तरह भदावर राज्य और गोहद राज्य के बीच सुलह के कोई आसार नहीं दिख रहे थे। अन्त में दोनों राज्यों के बीच युद्ध पर सहमति बनी। उधर गोहद के राजा भीम सिंह राणा ने अपनी सेना और सेनापतियों के साथ सभा की, युद्ध के लिए तैयार किया।

इधर भदावर राजा महेंद्र गोपाल सिंह भदौरिया जी भी युद्ध में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। क्योंकि उनकी नजर सामरिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण गोहद के किले पर थी, वह हर हाल में गोहद के किले पर कब्जा चाहते थे लेकिन उन्हें गोहद राज्य की शक्तिशाली हो चली सेना की भी खबर थी। इसलिए गोहद राज्य को शत-प्रतिशत जीतने के लिए भदावर राजा ने यद्ध की तैयारी हेतु सेनापतियों के साथ सभा की। इस समय भदौरिया राजा की सेना में 30,000 घुड़सवार सैनिक थे, जिनमें बहुसंख्यक लोधी राजपूत थे। क्योंकि लोधी राजपूत वीर एवं विश्वासपात्र होते थे। लोधी राजपूतों में ये गुण वर्तमान में भी उन्हें विशेष बनाते हैं। भदावर राजा ने गोहद राज्य की सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए अपने वीर और विश्वासपात्र सेनापति को सेना का नेतृत्व सौंपा। ये वीर योद्धा थे...

सेनापति धुआँराम सिंह लोधी

अवध के नवाब से भी सैन्य सहायता की मांग की। अवध के नवाब भी भदावर राजा की सहायता करने को तैयार हो गए। इसी क्रम में प्रधान सेनापति धुआँराम लोधी ने सोचा कि क्यों ना एक अटूट विश्वासपात्र सहयोगी को साथ लिया जाए। युद्धभूमि पर कुछ भी हो सकता है, इस बात को नकार नहीं सकते। इसलिए एक वीर और विश्वासपात्र सहयोगी को साथ लेने से बहुत मदद मिलेगी। इसलिए प्रधान सेनापति धुआँराम लोधी जी ने भिण्ड के ग्राम **अशोखर के अपने मित्र ठाकुर परमेश्वरी लाल लोधी** जी को सूचना भिजवाई और युद्ध में साथ चलने कहा। ठाकुर परमेश्वरी लाल लोधी जी ने अपने मित्र का प्रस्ताव स्वीकार कर तैयारी शुरू कर दी। ठाकुर परमेश्वरी लाल लोधी ग्राम अशोखर के ठाकुर जोरावर सिंह लोधी एवं माता यशोधरा देवी के पुत्र थे। परमेश्वरी लाल लोधी बाल्यकाल से ही तलवारबाजी, घुड़सवारी में निपुण थे। उसके बाद भदावर राजा महेन्द्र गोपाल सिंह भदौरिया जी और अवध के नवाब की संयुक्त सेना प्रधान सेनापति धुआॅराम लोधी के नेतृत्व में गोहद पर विजय का संकल्प लेकर चल पड़ी।

गुप्तचरों के द्वारा भदावर सेना के साथ अवध की सेना भी आ रही है, की खबर मिलते ही गोहद राज्य के राजा भीम सिंह राणा ने भी धौलपुर में पड़ाव डाले जाट सेना को सूचित कर दिया और धौलपुर की जाट सेना मुरैना की तोमर सेना को अपने पक्ष में करते हुए युद्ध भूमि के लिए निकल पड़े। लेकिन संयुक्त सेना के एकत्रित होने से पहले ही वीर जाट सरदारों से सजकर गोहद राज्य की सेना युद्ध के मैदान में आ गई। दोनों तरफ के सैनिक अपने -२ राज्यों के परचम लहरा रहे थे। वीर सेनापतियों के नेतृत्व में सैनिक विजय हेतु अपने-अपने भाला, तलवारों और अन्य प्रकार के शस्त्रों के साथ दंभ भर रहे थे। दोनों तरफ की सेना अपने-अपने राज्य की विजय हेतु आशान्वित थे। युद्ध का शंखनाद हुआ शंखनाद होते ही भिड़ने को तैयार खड़ी दोनों राज्यों की सेनाएं बहुत तेजी से एक दूसरे की ओर बढ़ने लगीं। उन्होंने अपने - अपने शस्त्रों की धार अपने विरोधियों की ओर कर लिए। घमासान युद्ध होने लगा। रणनीतिक जाल बिछने लगे। दोनों ओर

की सेनाएं वीरता से लड़ने लगीं । धुआँराम लोधी अपनी वीरता, बल और बुद्धि का प्रदर्शन करते हुए गोहद राज्य की सेना पर हावी होने लगे।

धुआँराम लोधी अपने प्रमुख सहयोगी परमेश्वरी लाल लोधी के साथ युद्धभूमि में लगातार कोहराम मचाये हुए थे। भदावर राज्य के दोनों रणबांकुरे अपने युद्ध कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे थे। दोनों के सामने आकर डटने एवं लड़ने का साहस कोई नहीं कर पा रहा था। भदावर राज्य और अवध के नवाब की संयुक्त सेना संख्याबल में गोहद की सेना पर भारी पड़ने लगी। गोहद राज्य की सेना पीछे हटने लगी। लगातार गिरते- कटते सैनिकों को देखकर गोहद राज्य की सेना का मनोबल टूटने लगा। गोहद राज्य की सेना आगे बढ़ने के बजाय पीछे की ओर तेजी से भागने लगी। वह यद्ध के मैदान से भागकर सुरक्षित स्थान की ओर दौड़ने लगी और उसके लिए अब एक ही सुरक्षित स्थान था, गोहद राज्य का किला। गोहद राज्य की पूरी सेना आत्मरक्षा हेतु किले में प्रवेश कर गई और किले के विशाल दरवाजे अन्दर से बन्द कर लिए।

संकट की घड़ी देखते हुए गोहद के राजा भीम सिंह राणा ने किले में मौजद सुरंगों के माध्यम से अपने परिजनों को राज्य से सुरक्षित बाहर निकाल दिया। कुछ उम्मीद के सहारे राजा भीम सिंह राणा किले में रहकर अपनी सेना और सेनापतियों का नेतृत्व करने लगे। बचने की कुछ तरकीब सोचने लगे। किले के सभी दरवाजे बन्द कर लिए गए। अब भदावर राज्य की संयुक्त सेना बाहर खडी थी। सेनापति धुआँराम लोधी अब किले के अन्दर प्रवेश करने के रास्तों के बारे में पता करने लगे। तीन ओर से बैसली नदी से गिरा गोहद राज्य का गोलाकार किले के सिर्फ एक तरफ रास्ता था। इस गोलाकार किले की चट्टानी पत्थरों से निर्मित तीन फुट मोटी और लगभग तीस फुट ऊंची दीवार को भेदना लगभग नामुमकिन सा था। किले की चाहरीदीवार पर जगह-जगह बने ऊँचे बुजों पर गोहद राज्य के सैनिक खड़े थे , जो भदावर सेना की सब हरकत पर निगरानी कर रहे थे। किले के अन्दर प्रवेश का अब एक ही रास्ता था। किले के बडे-२ दरवाजों को तोडकर। लेकिन यहां भी एक बहुत बड़ी समस्या थी। किले में सात मुख्य द्वार थे और सभी दरवाजों में सुरक्षा की दृष्टि से बाहर की तरफ बड़े- बड़े, मोटे लोहे के नुकीले कीले लगे थे।

गोहद किले में प्रवेश करने का फिलहाल यही एकमात्र रास्ता होने के कारण भदावर सैनिक लगातार दरवाजे को तोड़ने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन सफल नहीं हो पा रहे थे। हाथियों से भी टक्करें दिलवाई गई, लेकिन दरवाजों में लगे कीलों की वजह से हाथी चोटिल होने लगे। भदावर राजा महेन्द्र गोपाल सिंह भदौरिया को जब इन परिस्थितियों के बारे में ज्ञात हुआ तो उन्होंने तुरंत दरबार बुलाया। रणनीतिकारों से दरवाजे को तोड़ने को लेकर विचार - विमर्श हुआ। उसके बाद भदावर सेनापति धुआँराम लोधी के आदेश से हाथियों के मस्तिष्क पर लोहे के बड़े-बड़े तवों को बाँधकर दरवाजे में टक्कर दिलवाई गई लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी। क्योंकि लोहे के कीलों की वजह से तवे तितर-बितर हो जाते और हाथी पीछे हट जाते। समय लगातार बीतता चला जा रहा था। भदावर सेना की सारी मेहनत पर पानी फिरने की नौबत आ गई थी।

इधर गोहद राज्य का साथ देने के लिए चल पड़ी धौलपुर की जाट सेना और मुरैना की तोमर सेना गोहद राज्य किसी भी समय पहुंचने वाली थी एवं चिन्ता का एक विषय यह भी था कि कहीं गोहद राज्य के तैराक सैनिक सैकड़ों की संख्या में नदी पार कर किले में प्रवेश कर किले के अन्दर अपनी सैन्य शक्ति ना बढ़ा लें। इसलिए प्रधान सेनापति धुआँराम लोधी ने अपने सहयोगी परमेश्वरी लाल लोधी को सेना की एक

टुकडी का नेतृत्व प्रदान कर उन आक्रमणकारियों पर निगाह रखने एवं उन्हें रोकने का कार्य सौंपा गया जो नदी के रास्ते से किले में प्रवेश कर सकते थे। विरोधियों की ऐसी संभावना को धूमिल करने के लिए परमेश्वरी लाल लोधी अपनी सैन्य टुकड़ी को लेकर नदी किनारे पहँच गये और कड़ी निगरानी करते हुए वीरता से विरोधियों के मंसूबे नाकाम करने लगे। लेकिन प्रमुख समस्या अभी भी जस की तस थी। सेना एकटक दरवाजे को देख रही थी। सभी अपनी अपनी युक्तियां सेनापति धुआँराम लोधी जी को बता रहे थे। जो युक्ति समझ में आती, उस पर अमल किया जाता लेकिन सफलता हाथ नहीं लगती। अब धुआँराम को एक ऐसी वस्तु की तलाश थी जो एक तरफ लोहे की हो और दूसरी तरफ गद्देदार, नरम हो ताकि उसे दरवाजे से सटा दे और फिर हाथी अच्छी तरह से टक्कर दे सके ।

गोहद दुर्ग

धुआँराम ने फिर नजर उठाकर अपनी सेना की ओर देखा। वह निराश होकर खड़ी थी। क्योंकि सेना के साथ - साथ भदावर सेनापति धुआँराम लोधी को भी ज्ञात था कि अगर धौलपुर की जाट सेना और मुरैना की तोमर सेना आ धमकी तो विजय के मुहाने पर खडे भदावर राज्य को पराजय का मुंह देखना पड़ सकता है। वीरता से लड़ते हुए मुकाम तक पहुंचने वाली भदावर सेना की निराशा देखकर सेनापति धुआँराम ने फिर एक अद्वितीय निर्णय लिया। भदावर राजा ने उनपर जो विश्वास किया था, उस विश्वास को जीवित रखने के लिए अपने राजा को दिए विजयी होने के वचन को निभाने के लिये अंतिम बार अपनी सेना और अपने वीर साथियों की ओर देखा और फिर धीरे से मुस्कराये जैसे उन्हें विजय का मन्त्र मिल गया हो।

सभी सैनिकों की निगाहें अपने सेनापति की ओर थीं। फिर सेनापति धुआँराम लोधी ने निराश खड़ी सेना में उत्साह भरते हुए कहा कि विजय बलिदान मांगती है, और बलिदान हर किसी के भाग्य में नहीं होता | बलिदान तो वीरों का आभूषण है। अब इस विजय को साकार करने के लिए अविलंब हमें ही अपने छाती पर तवे बाँधकर दरवाजे को तोड़ना होगा । अपने सेनापति की यह बात सुनकर सम्पूर्ण सेना हैरान रह

गई। सेनापति धुआँराम लोधी अपनी छाती पर तवा बांधने लगे। अपने सेनापति का अद्वितीय साहस देखकर भदावर सेना में गजब का उत्साह आ गया। वह अपने शस्त्रों को उठा कर तैयार हो गई। इसी उत्साह के क्रम में **ग्राम चितावरी के जवाहर सिंह, रिदौली के सम्पति सिंह तसेले एवं पछायगांव के छत्तर सिंह कुलहियां** ने अपनी-अपनी छाती से तवा और ढाल बाँध लिए। उसके बाद तीनों फोजदार अपने सेनापति धुआँराम लोधी के साथ दरवाजे से सटकर खड़े हो गए। फिर संकेत पाकर हाथियों से टक्कर दी गई। एक ही टक्कर में गोहद राज्य के अभेद्य समझा जाने वाला किले का दरवाजा टूट गया और चारो वीर योद्धाओं के शरीर के परखच्चे उड़ गये। चारो योद्धा बलिदान हो गए।

उधर धुआँराम लोधी के प्रमुख सहयोगी परमेश्वरी लाल लोधी भी आक्रमणकारियों का पीछा करते हुए गोहद के निकट एक गाँव पुस्कानखेड़ा में विरोधियों से घिर गये। भीषण लड़ाई में परमेश्वरी लाल लोधी अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ वीरता से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। इस प्रकार भदावर राज्य के प्रमुख योद्धाओं की शहादत से गोहद का राज्य और दरवाजा दोनों टूट गये। दरवाजा टूटते ही तैयार खड़ी सेना अपने अन्य सेनापति के नेतृत्व में किले के अन्दर घुस गई और भीषण मारकाट मचाती हुई राजा को बन्दी बनाने के लिए उनके महल की ओर बढ़ने लगी। राजा भीम सिंह राणा को जब यह खबर मिली कि दरवाजा टूट गया है और भदावर सेना किले में प्रवेश कर गई है और महल की ओर आ रही है । राजा भीम सिंह राणा अब समझ गए कि उनकी हार हो चुकी है। अब उन्हें बन्दी बना लिया जाएगा। अब बिना समय गंवाए भीम सिंह राणा अपने कुछ विश्वासपात्र साथियों के साथ किले में बनी एक सुरंग के रास्ते से झांकरी भाग गए। उस समय झाँकरी के सामंत राव बलजू थे । सामंत राव बलजू राणा भीम सिंह का परिवारी चाचा थे। राणा भीम सिंह वहाँ से धौलपुर के लिए चले गए। इस प्रकार गोहद के किले पर भदावर राज्य का अधिकार हो गया। गोहद विजय के साथ ही अब भदावर राज्य की सीमा दूर-दूर तक फैल गई। उत्तर- पश्चिम में आगरा एवं उत्तर में इटावा की सरहद से दक्षिण में ग्वालियर राज्य की सरहद तक सीमा जा लगी। भदौरिया राजपूतों का गोहद पर कब्जा 1708 से लेकर 1739 तक रहा। **(इम्पीरियल गजेटियर आफ सेन्ट्रल इण्डया, 1908, कलकत्ता)** इस विजयी अभियान को लेकर भदावर राज्य में जहाँ खुशियाँ थीं तो वहीं अपने योद्धाओं को खोकर राज दरबार से लेकर आम जनमानस गमगीन था। सम्पूर्ण राज्य में शोक की लहर दौड़ गई।

इस अद्वितीय बलिदान के बारे में भदावर क्षेत्र में आज भी एक कहावत और लोकगीत प्रचलित है-

“मैंने रोप दई छाती, अब हूल दे हाथी”

इसी प्रकार ग्राम अजनौधा के पं० जियाराम शर्मा - ढमोले एक कविता कहते थे

बजे नगाढ़ा राज भदावर, राणा भीम गयो थर्राय

धुआँराम ने छाती रोपी, राणा भगो धौलपुर जाय

इस विजय के बाद भदावर राजा महेन्द्र गोपाल सिंह भदौरिया जी ने अपने वीर सेनापति धुआँराम लोधी के बलिदान को महत्व देते हुए धुआँराम लोधी के छोटे भाई भेदोराम को ग्राम नुन्हड की जागीर एवं धुआँराम लोधी जी सहयोगी ठाकुर परमेश्वरी लाल लोधी के वंशजों को ग्राम अशोखर की जागीर प्रदान की गई। इन जागीरों को बाद में मुस्तरा, जीसकपुरा, रवियापुरा, प्रतापपुरा, रजगढ़िया, पीपरी, लावन व पुर तक बढ़ाया गया। आज भी इन गांवों में लोधी राजपूत रह रहे हैं।

वर्तमान में नुन्हड की जागीरदारी का तो कोई नामोनिशान नहीं है लेकिन ग्राम अशोखर में आज कुछ ऐतिहासिक साक्ष्य मौजूद हैं। जिनका सरंक्षण इस **जागीरदारी के वंशज श्री संजय सिंह लोधी**, अधिवक्ता, ग्वालियर हाई कोर्ट कर रहे हैं। उनके पास जागीरदारी के समय के दस्तावेज और सिक्के भी मौजूद हैं। अटेर के दक्षिण तथा मेहगाँव के उत्तर-मध्य का यह इलाका चौरस है। इसलिए इसे आज चौरासी अथवा **लोधघार** कहा जाता है। इसी प्रकार भदावर राजा ने अन्य तीन बलिदानी फौजदार जवाहर सिंह, सम्पति सिंह एवं छत्तर सिंह के परिजनों को भी जागीर प्रदान कर उनके बलिदान को सम्मानित किया। हम सब नमन करते हैं इन महायोद्धाओं को जिन्होंने अपने राजा और राज्य की आन - बान और शान को बरकरार रखने के लिए अपनी शहादत दे दी।

लोधघार एवं लोधघारी भाषा

- भिण्ड जिले के अटेर के दक्षिण तथा मेहगाँव के उत्तर - मध्य की यह कृषि भूमि बहुत ही उपजाऊ और समतल है। यह इलाका चौरस कहलाता है। इसलिए इस कृषि भूमि पर बसे हुए सभी गांव

चौरासी कहलाते हैं एवं लोधी जाति के लोगों की अत्यधिक जनसंख्या होने के कारण यह **लोधघार** के नाम से भी जाना जाता है।

- लोधी क्षत्रियों द्वारा जो बोली व्यवहार में लायी जाती हे, उसे लोधघारी लोक भाषा कहा जाता है।
- मध्य प्रदेश के भिण्ड जिले के अटेर खण्ड का दक्षिण भाग, कुछ गांव तथा मेंहगाँव खण्ड का उत्तरी-पश्चिमी भाग लोधघार के नाम से जाना जाता है। इन खण्डों के गांवों में जहां लोधी क्षत्रिय निवास करते हैं। उनकी बोली में लोधघारी लोक भाषा का मिश्रित रुप पाया जाता है।
- वर्तमान में लोधघारी लोकभाषा बोलने वालों की अनुमानित संख्या 50 हजार है।
- लोधघारी लोक भाषा पर भदावरी लोक भाषा का सर्वाधिक प्रभाव है इसीलिए इनके कई शब्द एक जैसे है।

ठाकुर परमेश्वरि लाल सिंह लोधी

अध्याय 4 - चम्बल के लोधी क्षत्रिय वीर

❖ राजा वीरेंद्र सिंह लोधी

ग्वालियर संभाग का वह भाग जिसे वीरदायनी भूमि के ख़िताब से नवाजा है। हमारे शिखर पुरुषों ने, इस जिले में ग्वालियर से 170 किलोमीटर के अंतर्गत भांडेर तहशील रामगढो की वह जीण शीर्ण (गढ़ी) पहाड़ी पर बना महल जो की ग्वालियर रियासत की बहुत छोटी जागीर थी, शाहआलम औरंगजेब के सिपहसालार गाज़ी खान अपनी फतह का डंका बजाता हुआ इस और बढ़ता चला आ रहा था, रास्ते में रामगढो पर उसने पानी पीने के लिए अपनी फौजी कुमुक को रोका और अपने सेवकों को आदेश दिया की इस जागीर के जागीरदार को उनकी सेवा में प्रस्तुत किया जाय। सिपेहसालार गाज़ी खान का हुकुम जब वीरेंद्र सिंह लोधी के पास पहुंचा तो उनके सेवकों ने कहा की राजा साहब जब तक भगवान शंकर की पूजा नहीं कर लेते तब तक न वो किसी से मिलते हैं - न अन्न-जल ग्रहण करते है। सेवको ने सारी दास्तान सिपहसालार गाजी खान से बयान कर दी। इस पर गाजी खान तिलमिला गया और हुकुम दिया गया की जागीर जब्त कर वीरेंद्र सिंह को ग्वालियर किले में कैद कर दिया जाय। इसका विस्तृत विवरण कलकत्ता म्यूजियम में राखी किताब, **"हिन्दे वतन औरंगजेब"** जिसे खुद गाज़ी खान ने अपने अनुभव पर लिखा है।

जब उसने वीरेंद्र सिंह लोधी को ग्वालियर किले के मान मंदिर महल के तहखाने में कैद कर लिया गया तो यहाँ निम्न बातें विचारणीय है --

१) सिपेहसालार क्यों इतना घबरा गया की उसने तत्काल ही वीरेंद्र सिंह को मौत की सजा नहीं दी ?

२) वह वीरेंद्र सिंह को अपनी फ़ौज में सम्मान सहित पद क्यों देना चाहता था ?

३) वीरेंद्र सिंह को उसने इस्लाम कुबूल करने पर क्यों मजबूर नहीं किया गया ?

४) ग्वालियर का किला जो सिर्फ राजाओं को कैद करने के लिए था वहां एक साधारण जागीरदार को ही वहां क्यों रखा ?

५) भगवान शंकर के दर्शनों के बिना, वह अन्न जल ग्रहण किये बिना वह मौत की नींद सो गया। तब उसकी मौत का मातम मानाने गाजी खान क्यों उपस्थित हुआ ?

हमारा इतिहास विभिन्न धर्मों में हुए शहीदों का विस्तृत विवरण यथा संभव प्राप्त हो जाता है पर "लोधियों" का यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा की किसी भी इतिहासकार ने इस जाती को सम्मान प्रदान नहीं किया। क्या सिर्फ इसलिए की वे अन्य जातियों की तरह "राजपुरुषों", "नवाबों", "सुल्तानों" अथवा "नगर पतियों" या "नगर सेठों" के पास जी हुजूरी नहीं कर पाए या वे सदैव अपने रोजमर्रा के कार्यों में ही व्यस्त बने रहे और पढ़े लिखे वर्ग ब्रह्मणो को वे प्रशन्न नहीं रख पाए जिसके कारण उनका कहीं नमो निशान इतिहास में नहीं मिलता। वीरेंद्र सिंह को दीपावली के 8 दिन पूर्व ग्वालियर किले में कैद किया गया था तब उन्होंने सिर्फ जेलर से कहा की मुझे आदि पुरुष भगवान शंकर की पुजा की इजाजत दे दी जाय तब ही में अन्न जल ग्रहण करूँगा पर बुत परस्ती तब सम्बव ही नहीं थी इसलिए दीपावली के एक दिन पूर्व ही उन्होंने अपने प्राणो को छोड़ा ।

कवी ने श्रंद्धांजलि अर्पित करते हुए लिखा है -

धर्म हेतु अन्न जल त्यागा

त्यागा न आदिपुरुष का ध्यान

ऐसे धर्म भगत वीरेंद्र को

शील कवी का शत शत प्रणाम

❖ गढ खण्डहर

सवाई माधोपुर से लगभग 40 किलोमीटर पूर्व में स्थित खण्डहर का किला रणथम्बोर के सहायक दुर्ग व् उसस्के पृष्ठ रक्षक के रूप में विख्यात है। प्रकृति ने खण्डहर के किले को अद्भुत सुरक्षा कवच प्रदान किया है | प्रकृति की गोद में बसा यह दुर्ग घने जंगल, पूरे साल बहने वाली नदियों और अथाह तालाबों से घिरा है | खण्डार किला नैसर्गिक खूबसूरती का खज़ाना है, जिसके पूर्व में बनास व् पश्चिम में गालँदी नदियां बहती हैं | वहीँ यह दक्षिण दिशा में नहरों, तालाबों, तथा अनियमित आकार की पर्वत श्रंखलाओं से घिरा हुआ है |

समुद्र तल से लगभग 500 मीटर तथा भूतल से लगभग 200 मीटर ऊँचा, लगभग दो तीन किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला यह किला सवाई माधोपुर से लगभग 40 मिलोमीटर पूर्व में स्थित है यह किला कब बना और इसके निर्माता कौन था इसकी कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है | ग्यारहवी सदी में इस किले पर लोधी क्षत्रियों का शासन हुआ करता था, जिन्हें किसी कारण यह किला खाली कर के जाना पड़ा। सम्भवतः किसी युद्ध में पराजित हो कर या सूखे के कारण । स्थानीय लोगों के अनुसार इस किले के वारिस जो आज भी अन्य स्थानों पर विराजमान हैं, जो "कडहर" कहलाते हैं जो कि खण्डहर का अपभ्रंशित रूप है।

एक और विशेष बात जो इस गढ के बारे में स्थानिय लोगों में चर्चित है वह यह है कि वर्ष में एक बार इस गढ़ से आवाज गूंजती हैं कि - **"है कोई लोधा हाज़िर ?"**

खण्डहर का किला

❖ ऊंटगिरि दुर्ग

चम्बल नदी के नजदीक बने इस दुर्ग पर 11 वीं सदी से लेकर 14 वीं सदी तक इस दुर्ग पर लोधी राजपूत शासकों ने शासन किया था। इस किले के निर्माण के बारे में एक लोकगाथा काफी प्रचलित है " भोदू राज खण्डियार का उंटगिरी दियो बनाये अथार्त "लोधा राजपूत शासकों ने ये दुर्ग खण्डार (सवाई माधोपुर) के लोगों से बेगार में बनवाया था। यह दुर्ग गिरि व वन दुर्ग की श्रेणी में आता है। दुर्ग चारों तरफ से घने बीहड जंगलों व पहाडों से घिरा हुआ है। दुर्ग के चारों तरफ 4 कि.मी. का परकोटा उॅची दीवारों से निर्मित है। यह दुर्ग जमीन से लगभग 1.5 कि.मी.उॅची सीधी सुरंगनुमा पहाडियों पर निर्मित है। लगभग डेढ़ हजार फीट की सुरनागनुमा पहाड़ी पर बना होने के कारण एवं प्रशासन मार्ग के अभाव में लोग उस समय गिरते पड़ते पहुंचते रहे होंगे इसी वजह से दुर्ग का नाम किसी खास राजा के नाम पर न रखकर उंटगिरी पड़ गया हो और एक अन्य मत के अनुसार किले के ऊपर जाने का कोई रास्ता नही होने के कारण लोधी राजपूत शासक उॅटों पर बैठकर दुर्ग में आवागमन करते थे इस कारण इस दुर्ग का नाम उॅटगिरि दुर्ग रखा गया होगा, इस दुर्ग को ग्वालियर दुर्ग की कुंजी कहा जाता था।

इस दुर्ग में प्राचीन शिव मंदिर है जिस पर 100 फीट की उॅचाई से शिवलिंग पर पानी गिरता है इस पानी में शिलाजीत की मात्रा पायी जाती है, इससे प्रमाणित होता है कि लोधी राजपूत शासक शिव उपासक रहे होगें। इस किले में प्राचीन बावडी जल स्रोत के रूप में बनी हुई है जिससे पानी की आपूर्ति रही होगी । प्राचीन देवी-देवताओं व यादव वंश के शासकों की छतरियाँ इस दुर्ग में आज भी बनी हुई हैं।

करौली इतिहास के महान लेखक व साहित्यकार दामोदर लाल गर्ग के अनुसार इस दुर्ग पर लगभग 400 वर्षों तक लोधी (लोधा) राजपूत शासकों ने राज्य किया है, सन् 1397 ईसवी में अर्जुनदेव ने लोधी शासकों से जीत कर इस दुर्ग को यादव वंश के अधीन कर लिया था। सन् 1403-1423 ईसवीं तक अर्जुनदेव के पुत्र अभयचंद ने इस पर शासन किया। अभयचंद की मृत्यु के बाद उसका पोता पृथ्वीपाल

गद्दी पर बैठा । इसके बाद अफगान शासकों ने इस दुर्ग पर कब्जा किया , 1506-07 ईसवीं में इस दुर्ग पर सिकन्दर लोदी ने आक्रमण करके छीन लिया था, इसके बाद करौली के यदुवंशियों ने सिकन्दर लोदी से छीन लिया, अंतिम मुगलकाल तक इस दुर्ग पर करौली के यदुवंशियों का आधिपत्य रहा है.

❖ लोधा गढ़

भवनपुरा, राजस्थान के भरतपुर जिले के रूपवास तहसील का एक प्रमुख आदर्श ग्राम पंचायत मुख्यालय है। पूर्व में भवनपुरा एक छोटी रियासत थी जिसे 'भौनपुरा' के नाम से भी जाना जाता था। इसकी स्थापना सन 1624 ईस्वी में ठाकुर खजान सिंह लोधा जी ने की थी और यह अपने समय में लोधा-लोधी राजपूतों का गढ़ हुआ करता था। लोधा राजपूतों द्वारा बनवाये गए मंदिर, हवेलियाँ, किले के खंडहर व राज दरबार उनके रण कौशल और शासन काल की गवाही देते हैं। इसके पूर्व यह जगह बयाना के सम्राट महिपाल के अधिकार में थी। बयाना को बाणासुर की नगरी के नाम से भी जाना जाता है । बयाना के पूर्व दिशा में 12 किलो मीटर की दुरी पर यहाँ सम्राट महिपाल ने सन 1040 ईस्वी में 'भौना बाबा' देव स्थान की प्राण प्रतिष्ठा की थी, जब भी वे पहाड़ी जंगलो में शिकार खेलने के लिए निकलते थे तो सबसे पहले यहीं पर पूजा अर्चना करते थे । इस देव स्थान की देख रेख का काम एक गुर्जर जाती का सरदार करता था।

ठाकुर खजान सिंह की जब इस देव स्थान पर नजर पड़ी तो उन्हें यह इस्थान बहुत अच्छा लगा उन्होंने इस इस्थान को उस गुर्जर सरदार से उन्हें सोप देने को कहा लेकिन उस गुर्जर सरदार ने ऐसा करने से मना कर दिया तब ठाकुर खजान सिंह लोधा जी ने उस गुर्जर सरदार को युद्ध के लिए ललकारा जिसमे वह गुर्जर सरदार को बहुत बुरी तरह से पराजित हुआ और ठाकुर खजान सिंह जी के डर के कारण वहां से भाग खड़ा हुआ तब ठाकुर खजान सिंह जी ने उस पवन इस्थान पर अपना अधिकार जमा लिया। भौंना बाबा देव स्थान होने के कारण इस जगह का नाम भौनपुरा पड़ गया जो बाद में परवर्तित होकर भवन पुरा हो गया । बयाना के तत्कालीन सम्राट ने ठाकुर खजान सिंह लोधा के सौर्य व् वीरता से प्रभावित होकर उनको यहाँ का जागीरदार बना दिया। सन 1740 ईस्वी में महाराज बदन सिंह जाट द्वारा भवनपुरा जागीर को भरतपुर राज्य में मिला लिया गया था.

इससे पूर्व राजस्थान के प्रमुख राजवंशो में लोध राजपूतों का वैभवशाली राज्य लोद्रवा हुआ करता था। जिसके शासक थे महाराजा नृपभानु सिंह लोध जिनकी जेसलमेर के राजा देवरावल ने धोखे से हत्या कर दी थी और लोद्रवा राज्य पर अधिकार कर लिया तथा उनकी पुत्री से विवाह किया। यहाँ के लोध राजपूत सम्मान का जीवन यापन करने के लिए लोद्रवा से पलायन कर दूर-दराज के क्षेत्रो में चले गये । इसी पलायन में ठाकुर खजान सिंह के पूर्वज और अन्य लोधा क्षत्रिय ब्रज क्षेत्र में आकर बस गये और **"मथुरिया लोधी (लोधा) ठाकुर"** कहलाये।

20 जनवरी 1805 को अंग्रेजी सेना का कमान्डर लार्ड लेक भरी सेना के साथ भरतपुर पर आक्रमण करने के लिए धोलपुर होते हुए बाड़ी बसेडी व बांध बरेठा के पहाड़ी जंगलो को पार करते हुए जा रहा था, तब उस अंग्रेज कप्तान को रोकने के लिए ठाकुर कान्हा सिंह लोधा जी ने अपनी सेना के साथ खेरे वाली चामड माता मंदिर के पास पहुच गए तब वहां लोधा क्षत्रियों और अंग्रेजी सेना में घमासान युद्ध

हुआ , सेकड़ो लोधा क्षत्रिय योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गये और इस युद्ध की कीमत ठाकुर कान्हा सिंह लोधा जी को रणभूमि में अपना बलिदान देकर चुकानी पड़ी , लेकिन इससे पहले इस वीर योद्धा ने अपने दूत भेजकर भरतपुर महाराज श्री रणजीत सिंह को इसकी सुचना दे दी थी जिससे महाराज रणजीत सिंह ने अंग्रेजो की यौजना को बिफल कर दिया।

लोधा गढ़ किला

लोधा गढ़ किले की नींव सन 1656 ईस्वी में ठाकुर रूप राम सिंह लोधा जी ने रखी थी, जिसका निर्माण कार्य सन 1661 में पूर्ण हुआ। किले के पूर्व दिशा में सिंह द्वार बना हुआ था, जिसके सामने एक कुआ बना हुआ था जो पानी पीने के काम में लिया जाता था व साथ ही राज परिवार की हवेलियाँ भी बनी हुयी थी। पश्चिम दिशा में बयाना द्वार था, उतर दिशा में रूपवास द्वार था जिसके सामने राजदरबार यानि चौपाल बनी हुई है तथा दक्षिण दिशा में बारेठा द्वार था, जिसके सामने शिव मंदिर व मंदिर वाला कुआ बना हुआ हैं तथा मीणा जाती की बस्ती बसी हुई हैं। सन 1740 ईस्वी में भवन पुरा के खेरे पर बसने वाली जाट जाती के लोगों ने लोधा गढ़ को कर देने से मन कर दिया जिस पर जागीरदार ठाकुर बाल मुकुंद सिंह लोधा ने उन पर आक्रमण कर उन्हें वंहा से भगा दिया तथा उनकी 500 बीघा जमीन पर भी कब्ज़ा कर लिया था। तब जाट जाती के लोग वहां से भाग कर भरतपुर नरेश महाराज बदन सिंह की सरण में चले गये जिस पर महाराज बदन सिंह जाट ने इसे जातीय अपमान मानकर लोधा राजपूतों से प्रतिशोध लेने के लिए लोधा गढ़ पर आक्रमण कर दिया भरतपुर की विशाल जाट सेना के सामने लोधा गढ़ के लोधा राजपूतों की सेना संख्या में कम थी, युद्ध आरम्भ हुआ लोधा राजपूतों ने अपना रण कौशल दिखाना आरम्भ किया और जाटों को पराजित करना सुरु किया लोधा राजपूतों की वीरता और रण कौशल को देख भरतपुर नरेश भी हैरान थे एक बार को उनके मन भी भय उत्त्पन हो गया था लेकिन लोधा राजपूतों की संख्या काम होने के कारन युद्ध का पासा पलट गया और युद्ध जाटो के हक़ में जाता दिखाई देने लगा अंत में इस भयंकर युद्ध में जाटो की विजय हुयी और जागीरदार ठाकुर बाल मुकुंद सिंह लोधा को बंधी बना लिया गया और डीग लेजाकर उन्हें कारागार में दाल दिया गया था। तब महाराज बदन सिंह ने अपने क्रोध को सांत करने के लिए लोधा गढ़ का सम्पूर्ण विनाश कर दिया लोधा गढ़ के किले को तोड़ डाला और गधो से हल खिचवा कर उसे सपाट कर दिया और किले पर तेनात 4 तोपे, किले का मुख्य दरवाजा तथा इमारती पत्थर के खंभ इत्यादि लूटकर ले गये, उसी समय से श्राप लगा हुआ हैं की इस जगह पर कभी कोई किला आवाद नही हो सकेगा। उस विनाश के बाद लोगों ने एक बार पुनः लोधा गढ़ को फिर से बसाने के उद्देश्य से वहां पर मकान बना कर रहने का प्रयास भी किया लेकिन ज़्यदातर परिवारों को बर्वाद होकर वहां से बहार निकलना पड़ा लेकिन उनके मकान आज भी खंडर के रूप में देखे जा सकते हैं।

मुख्य आकर्षण

श्री लोधेश्वर महादेव मंदिर :- यह मंदिर भवनपुरा का सबसे भब्य व सुंदर मंदिर है । वास्तुकला में यह राजपूत शैली में बना हुआ है मंदिर की दीवारें पत्थरों से चिनी हुई हैं और मंदिर के खम्भे बंशी पहाड़पुर के इमारती सफेद पत्थर के लगे हैं जिन पर सुंदर नकाशी दर्शनीय है । मंदिर निर्माण में कहीं भी लोहे का इस्तेमाल नहीं किया गया है। यहाँ पर हजारों श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। केवल श्रधा की द्रष्टि से ही नहीं, बल्कि अपने अद्धुत वाश्तुशिल्प के कारण भी यह मंदिर लोगों को आकर्षित करता है । हर साल शिव भक्त सौरों से गंगाजल लाकर मंदिर पर चढाते हैं। मंदिर के गर्भगृह में शिवालय बना हुआ है, इसके

आलावा श्री राम दरबार , श्री राधा कृष्ण दरबार , श्री दुर्गा माता दरबार व श्री हनुमान जी की विशाल मूर्ति भी यहाँ देख सकते हैं ।

श्री हनुमान मंदिर :- यह मंदिर भवनपुरा के पश्चिम दिशा में बना हुआ है यहाँ पर शनिवार व मंगलवार को भक्तों की भारी भीड़ होती है ।

श्री शिव मंदिर :- यह मंदिर भवनपुरा के पचिश्म दिशा में बस्ती के बीच में बना हुआ है। जिसके सामने मंदिर वाला कुंआ बना हुआ है यह मंदिर यहाँ के प्राचीन मंदिरों में से एक है ।

खेरेवाली चामड माता मंदिर :- भवनपुरा के दक्षिण पश्चिम दिशा में करीब 2 किलो मीटर की दुरी पर प्रसिद्ध खेरेवाली चामड माता का मंदिर बना हुआ है जो ककुंड नदी के तट पर स्थित है इस मंदिर की आस पास के क्षेत्रो में काफी मन्यता है व प्रतिवर्ष यहाँ पर भादों की अष्ठमी को एक विशाल मेला लगता है इसके साथ साथ खेल कूद प्रतियोगताओ का भी आयोजन किया जाता है ।

राजदरबार (चौपाल) रानी अवन्ती बाई भवन :- इस राजदरबार का निर्माण सन 1856 में ठाकुर रूपराम सिंह लोधा जी ने किया था । यह आज भी अपनी भब्यता लिए हुए खड़ा है । सन 1995 में तत्कालीन सरपंच ठाकुर गुल्ला राम सिंह लोधी जी ने इसकी मरम्मत करा कर इसका नाम रानी अवन्ती बाई भवन रखा था ।

लोधा समाज वृधाश्रम :- लोधा क्षत्रिय समाज वृधाश्रम की नीव सन 1999 में ठाकुर गुल्ला राम सिंह लोधी सरपंच के कार्यकाल में जन सहयोग से रखी गई थी । इसके लिए करीब एक हजार वर्ग गज जमीन सरपंच साहब ने ग्राम पंचायत को दान की थी व तत्कालीन संसद श्री बहादुर सिंह कोली ने वृधाश्रम के लिए अपने संसदीय कोष से एक लाख पचास हजार रुपये स्वीक्रत किये थे और श्रीमति जविता देई लोधी सरपंच के कार्यकाल में निर्माण कार्य पूरा हुआ । यहाँ पर पब्लिक लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध है।

तालाब :- भवन पुरा के दक्षिण दिशा में एक विशाल तालाब बना हुआ है जिसका क्षेत्रफल लगभग ४ बीघा है व एक तालाब ग्राम के उत्तर दिशा में बना हुआ है जिसके घाट पर आलिशान शमसान घाट व कुआ बना हुआ है ।

नहरें :- ग्राम भवनपुरा के पूर्व दिशा में व पश्चिम दिशा में से होकर दो नहरें निकलती है , जो कृषि के सिचाई का काम करती हैं । इनका उद्गम स्थल बंध बरेठा है।

❖ श्री श्री....१००८ स्वामी केशवानन्द जी महाराज

भारतवर्ष सदैव से महान सन्तो, योगियों की भूमि रहा है। जिन्होंने अपने तेजस्वी जीवन का सर्वस्व मानव समाज का कल्याण करने के लिए समर्पित किया है। ऐसे ही महान आत्मज्ञानी परमहंस व्यक्तित्व के धनी संत शिरोमणि जो भगवान भोले नाथ के परम भक्त थे और जिन्होंने अपने दिव्य जीवन से सिर्फ लोधी क्षत्रियों को ही नहीं वरन सम्पूर्ण मानव समाज को प्रकाशित किया। आज भी वह लोगों के अटूट श्रद्धा एवम् विश्वास के प्रतीक हैं। समाज के लोगों के भगवान स्वामी केशवानन्द जी महाराज का जन्म भिण्ड शहर से सटे हुए ग्राम लावन में इति वैशार शक्ल पक्ष पंचमी. दिन मंगलवार, विक्रम संवत 1944 को किसान पिता श्री गोविंद सिंह और माता बिठुलाबाई की संतान के रूप में हुआ था। स्वामी केशवानन्द जी महाराज के बचपन का नाम जगन्नाथ था। जिन्हें सभी प्यार से **"जगत "** कहकर बुलाते थे।

जब पुत्र जगन्नाथ की आयु मात्र तीन वर्ष थी उसी दौरान पिता गोविंद सिंह स्वर्ग सिधार गये इसलिए बहुत ही कम आयु में स्वामी जी का विवाह कर दिया गया लेकिन समाज में चारो ओर फैले धार्मिक अन्धविश्वास, कर्मकांड, पाखंड और समाज में फैली कुरीतियों को देख स्वामी जी का मन दुःख से विचलित हो गया। बहुत ही कम आयु में उन्हें ज्ञात हुआ कि हमारा समाज इन कुरीतियों, पाखंड और अन्धविश्वास के कारण बहुत पीछे चला जा रहा है। समाज की प्रगति नहीं हो पा रही है। इसलिए उन्होंने अपने समाज को मानसिक गुलामी से स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपना सुन्दर वैवाहिक जीवन को त्याग कर समाज के कल्याण के लिए निकल पड़े।

स्वामी जी ने जब अपना घर त्यागा तब उनकी आयु मात्र 17 वर्ष थी। इतनी कम आयु में समाज सुधार की घोर लालसा लिए स्वामी जी सच्चे गुरु की तलाश में बेबर, जिला मैनपुरी, उत्तर प्रदेश पहुँचे। जहाँ उन्हें स्वामी विरजानन्द ने दीक्षा दी और तभी से जगन्नाथ **'स्वामी केशवानन्द'** कहलाए जाने लगे। दीक्षा ग्रहण करने के बाद स्वामी जी आध्यात्मिकता की खोज में देश भ्रमण पर निकल गये। देश में मौजूद विभिन्न धर्मों के तीर्थ स्थलों की यात्राएं कीं, सभी धर्मों का गहन अध्ययन किया, अनेक पंथों, सम्प्रदायों के गुरुओं से ज्ञान अर्जित किया। देश में मौजूद तमाम विचारधाराओं को जाना, उन्हें समझा। स्वामी जी कहते थे हमें सभी धर्मों का, सभी जातियों का सम्मान करना चाहिए। देश भ्रमण के दौरान स्वामी जी ने जातिवाद, छुआछूत, धार्मिक पाखंड, अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतियों को देखा। संत प्रवर स्वामी ब्रह्मानन्द जी से भेंट पंजाब के भटिंडा में भ्रमण करने के दौरान स्वामी केशवानन्द जी महाराज की भेंट संत प्रवर स्वामी ब्रह्मानन्द जी से भेंट हुई । इसके बाद जब स्वामी ब्रह्मानन्द जी उज्जैन आये थे तब यहीं मण्डलेश्वर के समीप स्वामी केशवानन्द जी महाराज से पुनः भेंट हुई। स्वामी जी ने इस दौरान कई विदेश यात्राएं भी की।

स्वामी जी ने खेत - खलिहानों पर बने ट्यूब् वेल आदि को अपना विश्राम स्थल बना लिया था। वे कभी किसी भी भक्त की घर - गृहस्थी में कदम नहीं रखते थे। स्वामी जी को भगवान की भक्ति के लिए मन्दिर जाने या किसी तीर्थ स्थल पर दर-दर भटकने से परहेज करते थे। अपनी आत्मा को कष्ट देकर परमात्मा को प्रसन्न करना उन्हें हास्यास्पद लगता था। वह इसी पाखंड और आडंबरों का विरोध और इन्हें खत्म करने के लिए ही तो संघर्ष करते थे। स्वामी जी लोगों को समझाते थे कि भगवान आपकी भक्ति में होते हैं किसी मन्दिर, आडंबर में नहीं । आत्मा ही परमात्मा होती है। तो फिर आप अपने शरीर अथवा आत्मा को कष्ट देकर ईश्वर की भक्ति कैसे कर सकते हैं। स्वामी जी कहते थे" स्वस्थ रहो और मन में उच्च विचार लाओ।" आज भी ऐसे कई लोग हैं जो वास्तविक रूप से स्वामी जी के दर्शन पर चल रहे हैं, वे अपने जीवन

में हजारों विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी निरंतर प्रगति कर रहे हैं। स्वामी जी समाज में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों के घोर विरोधी थे । जैसे बाल - विवाह , फिजूल खर्ची को समाज का शत्रु मानते थे। वे कई बार देखते थे कि घर में बच्चों के लिए ढंग से भोजन नहीं है, कपड़े नहीं है, शिक्षा की व्यवस्था नहीं है और लोग तीर्थयात्रा पर जाते हैं, धार्मिक आयोजन करते हैं। समाज के लोगों में जुआ, शराब की लत। यह सब देखकर वह बहुत दुःखी हो जाते थे । सबसे ज्यादा दुःखी तो तब हो जाते थे जब समाज में तेरहवीं होते देखते थे। तेरहवीं से उन्हें सख्त नफरत थी। तेरहवीं के लिए कई लोग दूसरों की बातों अथवा शेखी के चलते अपनी जमीन-जायदाद तक को बेच देते हैं। स्वामी जी कहते थे कि तेरहवीं करना और खाना दोनों महापाप होता है। तेरहवीं गिद्धों का भोज है। स्वामी जी ने सिर्फ अपने ही लोधी समाज को ही नहीं वरन् अन्य पिछड़ो के उत्थान के लिए भी संघर्ष किया। कई राज्यों में भ्रमण किया। कहीं कोई समस्या होती तो स्वामी जी उसका समाधान भी बताते थे।

स्वामी जी ने सदियों से चले आ रहे रूढ़िवाद को समाज से मिटाने पर बल दिया। विधवा विवाह पर जोर दिया, धार्मिक अन्धविश्वास को खत्म करने का प्रयास किया। स्वामी जी शिक्षा को बहुत महत्व देते थे। स्वामी जी हमेशा कहते कि शिक्षा से समाज का उत्थान हो सकता है। महिलाओं को शिक्षित करने के भी पक्षधर थे। हमेशा भ्रमण करते हुए समाज को एकजुट करने का प्रयास करते थे। समाज किस तरह से आगे बढ़ सकता है? इस पर गहन विचार करते थे और लोगों को मार्गदर्शित करते थे। स्वामी जी कहते थे कि जो कार्य समाज की प्रगति में बाधक है उस कार्य को कतई मत करिए। स्वामी जी कहते थे कि जो धन आप धार्मिक कर्म कांड, पाखंड, आडंबर और वैवाहिक समारोह में फिजूल खर्च करते हैं उस धन को अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करिए, उनके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करिए। उन्हें व्यापारी बनाइए, अफसर बनाइए । समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाइए। ताकि हमारा समाज आगे बढ़ सके। स्वामी जी ने अपने आत्मज्ञान से जल संरक्षण के लिए संघर्ष किया। उन्होंने जल की समस्या को लेकर और उसके समाधान के लिए गहन चिंतन किया। वह अपने आत्म ज्ञान से किस खेत में कुआँ खोदना सही रहेगा, कहाँ ज्यादा पानी है, सब बता दिया करते थे। किवदन्तियो के अनुसार स्वामी जी खेत की मिट्टी चखकर बता देते थे कि यहाँ खोदने से पानी मीठा निकलेगा। स्वामी जी अपने कमंडल और वर्षों से सूखी पड़ी कुइओं में पानी लाकर बड़े से बड़े आयोजनों को सफल बना देते थे।

स्वामी जी के साथ यात्रा में साथ चलने वाले किसी व्यक्ति को अगर भूख लगती थी तो स्वामी जी अपने कुर्ते से दो - चार किशमिश अथवा इलायची निकाल कर खाने को दे देते थे। मात्र दो-चार किशमिश अथवा इलायची से ही लोग तृप्त हो जाया करते थे। कभी-कभी स्वामी जी अपने आसपास खेल रहे बच्चों को

अपने कुर्ते की जेब से बर्फी अथवा पेड़ा निकाल कर दे देते थे। उन्हें खाकर तुरंत बच्चों की भूख मिट जाती थी। स्वामी जी ने जब से वैराग्य अपना लिया था तब से उन्होंने रुपये - पैसों को हाथ भी नहीं लगाया था। स्वामी जी सबसे बड़ा धन ज्ञान और मानसिक स्वतंत्रता को मानते थे। उन्हें जब कभी जमीन पर कोई सिक्का या रुपया पड़ा दिख जाता था तो वह वहीं आसपास खेल रहे बच्चों को इशारा कर देते थे। फिर वह बच्चे खुशी - खुशी उस सिक्के अथवा रुपये को उठा लेते थे। स्वामी जी का ज्यादातर समय उत्तर प्रदेश के ग्रामों एवं कई देशों के भ्रमण में व्यतीत हुआ। उसके बाद भिण्ड के ग्राम रजपुरा को ही अपना आश्रय स्थल बना लिया। इसे अपना परम सौभाग्य मानते हुए समाज के लोगों ने एक मत होकर ग्राम रजपुरा में स्वामी जी जहाँ ठहरते थे, विश्राम करते थे। उसी स्थान पर उनकी मूर्ति स्थापित की और एक छोटा सा मन्दिर बनवाया ।

लोधी क्षत्रिय समाज के आपसी जनसहयोग और आस्था ने आज वह मन्दिर भिण्ड जिले का सबसे ऊँचा मन्दिर बना दिया है। भक्त से भगवान बने स्वामी केश्वानन्द जी का यह मन्दिर 108 फीट ऊँचा है। बहत ही सन्दर और आकर्षक आकति में डिजाइन किए गये इस मन्दिर में। स्वामी जी की दो मूर्तियाँ स्थापित हैं। इस मन्दिर में चारों कोनों पर चार मीनारें और एक मीनार मध्य में है जो सबसे ऊंची है। गोल - गोल घूमते हुए जीने शिखर तक जाते हैं। वहाँ से फिर चारों ओर देखना बड़ा ही रोमांचक लगता है । इस मन्दिर पर हर वर्ष महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर विशाल मेला लगता है। हजारो श्रद्धालु उमड़ते हैं। स्वामी जी के दर्शन करते हैं। आम जन के साथसाथ समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति, राजनेता स्वामी जी के दरबार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। विभिन्न सामाजिक विषयों और कार्यों पर चर्चा होती है।

विवाह से पहले के कार्यक्रम हेतु दोनों पक्ष भी एकत्रित होते हैं। इस दिन सैकड़ों श्रद्धाल गंगा जी से कांवर भरकर गंगा जल स्वामी जी को अर्पण करते हैं। यह एकमात्र उदाहरण है कि जहाँ गंगा जल भगवान पर नहीं बल्कि उनके भक्त को अर्पित किया जाता है। कहा जाता है कि पहली बार सैकड़ों कांवरियों ने जब गंगा जल स्वामी जी को चढ़ाया था तब गंगा जल की एक बूंद भी स्वामी जी के केशों से बाहर नहीं गिरी थी।

स्वामी जी के प्रेरक वचन

- यह आप पर निर्भर करता है कि आप शिक्षित होकर सिर का मुकुट बनना चाहते हो या पाखंडवादी जीवन जीकर चरण पादुकाएँ ।
- यदि मेरे बताए सद् मार्ग पर चलोगे तो सिंहासन पाओगे।
- पाखंड मय जीवन आपको पतन की ओर ले जायेगा।
- जो मोह-माया से प्रेम और धार्मिक आडम्बर फैलाते हैं, वो संत नहीं लटेरे हैं ।
- पाखंडी लोग धर्म का भय दिखाकर आपको सत्य मार्ग से दूर ले जायेंगे।
- विद्रोही हूँ मैं ऐसे धर्म का जो किसी मानव के छूने से भ्रष्ट हो जाता है। मैं ऐसे धर्म को नहीं मानता।
- ऐसा जीवन मत जिओ कि लोग आपसे दूर हो जाएं, ऐसा जीवन जीओ कि लोग आपसे प्रेरणा लें।
- जिसे आप मन्दिर में देखने जाते हैं, वो आपके माता पिता हैं एवं जिसे आप धर्म में ढूँढते हो आपके अन्तर्मन में है।
- जो सब कुछ त्याग देता है, वह सब कुछ पा लेता है।

स्वामी जी की प्रमुख शिक्षाएँ

- हमेशा पाखंड, आडंबरों और अन्धविश्वास से दूर रहो।
- जो कार्य समाज की प्रगति में बाधक है उस कार्य को बिल्कुल ना करिए।
- शिक्षा प्राप्ति पर विशेष ध्यान और महिलाओं की शिक्षा पर अत्यधिक बल दीजिए।
- अगर वास्तविक सम्मान चाहते हो तो फिजूलखर्ची और दिखावे की मानसिकता से दूर रहो।
- मृत्यु भोज करने और खाने जैसे महापाप से मुक्त रहो। इस धन को बचाकर गांव में किसी गरीब कन्या का विवाह कर दो।
- सामूहिक विवाह करो, इससे समाज आर्थिक रूप से मजबूत होता है सामाजिक एकता का उद्भव होता है।
- समाज के किसी गरीब मेधावी विद्यार्थी के वर्ष भर का शिक्षण शुल्क उपलब्ध कराएँ।
- समाज में जुआ और शराब पर पाबंदी करो।
- मन्दिरों या तीर्थों पर भटकने के बजाय अपने विचारों को उच्च करो एवं अच्छे कर्म करो।
- मानसिक गुलामी से स्वयं को स्वतंत्र करके सामाजिक, आर्थिक औरराजनीतिक स्तर पर आगे बढ़ो।

❖ हवलदार सुल्तान सिंह नरवरिया (वीर चक्र)

चंबल के बीहड़ों में पले-बढ़े नौजवानों में देशभक्ति का जज्बा कूट-कूटकर भरा है। देश की रक्षा के लिए जब भी परीक्षा की घड़ी आई, यहां के नौजवानों ने अपना सीना आगे किया है। वर्ष 1999 में पाकिस्तान से कारगिल युद्ध में मेहगांव के वीर जवान हवलदार सुल्तान सिंह नरवरिया ने इस बात को सच कर दिखाया था। चंबल के इस "सुल्तान" ने कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के लक्ष्य 15 हजार फीट ऊंची तोलोलिंग पहाड़ी को फतह किया। सीने पर पाकिस्तानी आतंकियों की मशीनगन की गोलियां खाकर भी तिरंगे के मान को बचाया।

सेक्शन कमांडर की भूमिका में शहीद हुए सुल्तान

ऑपरेशन विजय में हवलदार सुल्तान सिंह नरवरिया को सेक्शन कमांडर नियुक्त किया गया था। उन्हें काम मिला था तोलोलिंग पहाड़ी की पोस्ट पर दुश्मनों की मशीनगन को नेस्तनाबूद कर कमांड करना है। जांबाज नरवरिया अपने गिनती के साथियों के साथ टास्क पूरा करने आगे बढ़े। दुश्मन ऊंचाई पर बैठकर निशाना बना रहा था।

12-13 जून, 1999 की रात शहीद नरवरिया और उनके साथियों का असलाह खत्म होने लगा। पोस्ट पर कब्जा किए बिना तोलोलिंग पहाड़ी पर फतह मुश्किल थी। नरवरिया साथियों के साथ भारत माता का जयकारा लगाते आगे बढ़े। दुश्मन की मशीनगन ने गोलियों से उनका सीना छलनी कर दिया, लेकिन उनके कदम नहीं रुके। उन्होंने देश की रक्षा में अपनी जान गंवाकर पोस्ट को फतह कर तिरंगा झंडा फहरा दिया। भारतीय सेना ने नरवरिया की शहादत को इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज कर उन्हें मरणोपरांत **वीर चक्र** प्रदान किया।

❖ काछुई गाँव की बाईस सतियाँ

वर्तमान मध्य प्रदेश के चम्बल नदी के बीहड़ों के आंचल में बसा हुआ काछुई ग्राम राज्यों के उन्मूलन से पूव्र ग्वालियर रियासत का एक अंग हुआ करता था। सदियों पूर्व उक्त ग्राम में केवल लोधी क्षत्रिय ही रहते थे। वे ग्राम की भूमि के स्वयं स्वामी थे और महाराजा ग्वालियर को सीधे मालगुजारी अदा करते थे। उनके वंशज आज भी अल्प संख्या में उक्त ग्राम में निवास करते हैं। मुगल काल में एक बार एक भदौरिया ठाकुर जिसका नाम गोपी सिंह भदौरिया था उक्त ग्राम में आकर बस गया।

ग्राम निवासियों ने उसको सम्मान गांव में बसाया और उसे मालगुजारी आदि वसूल करने तथा राज्य कोष में जमा करने का काम सौंप दिया शनैः शनैः ठाकुर महाशय ने राज्य कर्मचारियों से अपना संबंध स्थापित कर ग्राम की जमींदारी अपने नाम करवा ली। 'प्रभुता पाई, काहि मद नाहीं ' के फलस्वरूप वह ग्राम निवासियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार करने लगा। जब स्थिति असहनीय हो गई तो स्वतंत्रता - प्रिय काछुई ग्राम निवासियों और ठाकुर गोपी सिंह के मध्य भीषण संघर्ष हुआ जिसमें गोपी सिंह और उसके समस्त ७ पुत्रों को लोधी क्षत्रियों ने मार गिराया। इस समाचार से काछुई ग्राम के निकटवर्ती ग्रामों

के भदौरिया ठाकुर परिवारों में रोष छा गया उन्होंने इसे जातीय संघर्ष माना और उन्होंने संगठित होकर काछुई ग्राम पर धावा बोल दिया। भदौरियों और लोधियों के बीच भयंकर लड़ाई हुई जिसमें दोनों ओर से अनेक जानें गई। काछुई ग्राम के बाईस लोधी क्षत्रिय लड़ते हुये वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी स्त्रियों ने वीर क्षत्राणियों का अनुकरण कर अपने पतियों के शवों के साथ अपने को चिता की अग्नि में जीवित ही जला दिया। वे सब सती हो गई। यह है इस वीर लोधी क्षत्रिय जाति की ललनाओं के अद्वितीय जौहर का एक ऐतिहासिक उदाहरण जिन्होंने अपने प्रिय ग्राम की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्राणहुति देने वाले अपने पतियों के साथ अपने को अग्नि के सुपुर्द कर दिया। अब भी काछुई ग्राम स्थानातंरित बुधरैया शाखा के अनेक लोधी क्षत्रिय परिवार पीपरीपुर, बिरहीपुर, धर्मपुर आदि अनेक ग्रामों में निवास करते हैं।

❖ जागीरदार शंकरलाल सिंह लोधी

मध्य प्रदेश के चाचौड़ा तहसील के तेलीगाँव जागीर के स्वामी ठाकुर शंकरलाल सिंह लोधी थे। शंकरलाल सिंह शरीर से बलिष्ठ, वीर, निर्भीक और साहसी थे। यह घटना १९०५ के आसपास की है जब एक बार ग्वालियर के महाराज माधवराव द्वितीय सिंधिया (1886–1925) का कोतवाल मालगुजारी वसूल करके तेलीगांव से गुजर रहा था तब जागीरदार शंकरलाल सिंह ने उसे बुलवाया और उससे रुपयों की थैली खुलवाई तो वो चांदी के सिक्कों से भरी हुयी थी तब उसने उन चाँदी की मुद्राओं को थैली से उठाया और उन्हें सहज में मोड़ कर गोलियां बना दी और थैली कोतवाल को देके उसको जाने दिया। कोतवाल जब ग्वालियर पहुंचा तब ग्वालियर महाराज ने कोतवाल से पूछा ये रुपये हैं या गोलियां तब कोतवाल ने मार्ग में घटी घटना का सारा ब्यौरा महाराज को दिया, तब महाराज ने दो पहलवान भेजकर जागीरदार को बन्दी बनाकर लाने का आदेश दिया।

पहलवान तेली गांव पहुंचे और शंकरलाल सिंह को सिंधिया महाराज का आदेश सुनाया। आदेश को सुनकर जागीरदार पहले तो मुस्कराया फिर उसने दोनों पहलवानों को अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने हेतु अपना सर दबाने को बोला। दोनों पहलवानों ने पूरी शक्ति लगा दी पर उसका बाल भी बांका न कर पाए फिर जागीरदार ने दोनों पहलवानों का सर अपने एक-एक हाथ से दबाया जिसमें एक पहलवान की एक आँख व दूसरे की दोनों आँखें निकल आई। शंकरलाल सिंह ने एक आंख वाले पहलवान को बोला इस अन्धे पहलवान को यहाँ से ले जाओ। जब दोनों पहलवान ग्वालियर पहुंचे और सिंधिया महाराज को शारा घटना क्रम कह सुनाया जिसे सुनकर महाराज ने भी जागीरदार शंकरलाल सिंह की शक्ति का लोहा माना तथा उनसे मित्रता करने हेतु उसे सम्मान सहित ग्वालियर लाने हेतु सवारी भेजी। जब जागीरदार शंकरलाल सिंह लोधी ग्वालियर पहुंचे तब उनका वहां शाही आतिथ्य सत्कार किया गया और उन्हें राजश्री मेहमान खाने में ठहराया गया। शंकरलाल सिंह लोधी के बलिष्ठ एवं सुन्दर शरीर और तेजस्वी मुख मण्डल को देखकर महारानी भी प्रभावित हुई तथा उन्हें ग्वालियर का सेनापति बनने का प्रस्ताव रखा। परन्तु जागीरदार ने विनम्र भाव से अपनी असमर्थता प्रकट की। कई दिनों तक मेहमानी कराने के बाद जब जागीरदार जाने लगा तब उसने अपनी शक्ति का परिचय देते हुए किले की जंजीर में इतना बड़ा कड़ा लगा दिया कि आज तक कोई व्यक्ति उसे सीधा नहीं कर पाया वह वैसी की वैसी ही है।

❖ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ठा.रामधन सिंह नरवरिया

बहुमूल्य रत्नों से आच्छादित भारत वसुधा का आंचल कितना दैदित्यमान है ये सर्वज्ञात है,समयानुसार कई नर रत्न इस भारत वसुधा ने दिये जो स्वयं के लिये नहीं वरन् समाज व राष्ट्र के लिये जियें और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अडिग रहे, एवं देश को गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने के लिये प्रयत्नशील रहे जाग्रत रहे ऐसे ही ज्योर्तिमान मालिका के दैदित्यमान रत्न थे "श्री रामधनसिंह जी" श्री नरवरिया जी (मेम्बर साहब) का जन्म 23 नवम्बर 1910 को लोधीघार चौरासी के ग्राम असोखर तहसील गोरमी, जिला-भिण्ड (म.प्र.) में हुआ, आपके पिता का नाम ठा. श्री गंगाप्रसाद जी (जमींदार) एवं माता का नाम श्रीमती द्रोपदा देवी था।

प्राचीन गढ़ी असोखर में जमींदारी स्थापना

ग्वालियर राज्य में जमींदारी प्रथा का आरंभ 18वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में माना जाता है, इसी समय 'सरजे अंजनगांव' की संधी में भदावर, जटवारा, लोधीघार, गुर्जरघार, राजपूतघार के क्षेत्र महाराज दौलतराव सिंधिया के अधीन आ गये थे, तभी से सिंधिया जी ने इन क्षेत्रों में जमींदारी प्रथा का आरंभ किया इस प्रथा के अधीन प्राचीन गढ़ी 03 से 10 वर्ष के लिए गढी (भू-भाग) प्रतिष्ठित व्यक्ति को सौंपा जाता था। महाराजा जनकोजीराज (1827-1843) की मृत्यु के बाद स्थापित कौंसिल ऑफ रीजेन्सी के दौर में इजारेदारी प्रथा के जगह जमींदारी प्रथा ने ले ली थी,जमीदारी प्रथा में गढ़ी (भू-भाग) को दो भागों में बांटा गया था।

(1) अविभक्त जमींदारी (2) पट्टीदारी जमींदारी

पट्टीदारी जमींदारी में दो या अधिक व्यक्तियों को संयुक्त रूप से ग्राम गढी का जमींदार नियुक्त किया जाता था ऐसी ही एक प्राचीन गढ़ी असोखर में श्री नरवरिया जी के पिता ठा.गंगाप्रसाद की जमींदारी थी संबंधित रिकॉर्ड ग्वालियर स्टेट के राजस्व शाखा (जमींदारी काल) में सुरक्षित है तत्पश्चात् "मध्यभारत जमींदारी समाप्ति विधान" (क्रमांक 13 सन 1951) पारित कर 25 जून 1951 को जमींदारी प्रथा को मध्य भारत में समाप्त कर दिया गया एवं मध्य भारत भू-राजस्व तथा काश्तकारी विधान 1950 को जमींदारी ग्रामों में लागू किया गया व भू-राजस्व की वसूली करने के लिए प्रत्येक ग्राम में। "पटेल" नियक्त किये गये सो गंगा प्रसाद जमींदार असोखर के कनिष्ठ पुत्र सिकन्दर सिंह को ग्राम का पटेल नियुक्त किया गया।

आजादी के लिए संघर्ष

मेंबर साहब (नरवरिया जी) सन 1935 से ही चंबल संभाग में भारत माता की आजादी के लिए संघर्षशील रहे, एवं कांग्रेस के सच्चे सिपाही रहे कांग्रेस पार्टी भारत की आजादी के लिये गांधी जी,नेहरू नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर संघर्षरत् थी एवं क्रांतिकारी साहित्य एवं समाचार देने के आरोप में अंग्रेजों ने भारतीय

कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया था, कांग्रेस का 50वां राष्ट्रीय सम्मलेन 1936 में लखनऊ में हुआ जिसकी अध्यक्षता पं.जवाहरलाल नेहरू ने की थी, अंग्रेजी पुलिस द्वारा किसी को भी इस सम्मेलन में भाग नहीं लेने दिया जा रथा,परन्तु मेम्बर साहब ने अपने साथियों के साथ इस सम्मेलन में भाग लिया, परन्तु आपको सम्मेलन स्थल से गिरफ्तार कर लिया गया और थाने में रखा गया, इस सम्मेलन में देश की आजादी के लिए रणनीति तैयार होना थी।

- मेम्बर साहब ने 31 मार्च 1936 में एक वृद्व जिला राजनैतिक सम्मेलन मिहोना में हुये सम्मेलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई व अपना अमूल्य योगदान दिया और आजाद भारत की मांग रखी।

- 08 नवम्बर 1941 को भिण्ड मुख्यालय पर एक राज्य व्यापी सम्मेलन (अधिवेशन) आयोजित किया गया, जिसमें मेम्बर साहब की भूमिका महत्वपूर्ण रही इस अधिवेशन में गांधी जी के निजी सचिव महादेव भाई देसाई ने पधारकर उद्घान किया व आजादी के संबंध में गांधी जी के विचार व आंदोलनों के रणनीति के बारे में क्षेत्रीय जनता को बताया एवं सत्याग्रह के लिए प्रेरित किया।

- 16 दिसम्बर 1941 को गोरमी में मेम्बर साहब ने एक सम्मेलन आहूत किया, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय जनता को आजादी की लड़ाई के लिए मानसिक व शारीरिक रूप से तैयार करना था, सम्मेलन सफल रहा परंतु आप अंग्रेजों के कोप का भाजक हो गये और अंग्रेजों ने आप पर लाठीचार्ज किया जिससे आपके दाहिने हाथ में गहरी चोट आई थी। कार्यक्रम में पातीराम नरवरिया, कैलाशनारायण कटंक, अमर सिंह, जुहूर मोहम्मद, लोहिया जी व अन्य क्रांतिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

- 09 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन में क्षेत्रीय जनता के नेतृत्व में देश की आजादी के लिये मेहगांव की एक सभा में सभा स्थल पर भारत का तिरंगा फहराया एवं आजादी का बिगुल बजा दिया, बाद में आप भूमिगत हो गये एवं चम्बल संभाग में आजादी के लिए संघर्ष करते रहे।

राजनैतिक सफर

- जून - 1936 को एक महत्वपूर्ण संवैधानिक परिवर्तन ग्वालियर स्टेट में किया गया, जब शासक ने मजलिस-ए-आम और मजलिए-ए-कानून के स्थान पर द्विसदलीय विधान मंडल जिन्हें प्रजासभा और सामंत सभा (जो बाद में राजसभा) कहलायी, जिन्हें विधायी कार्यों के अलावा प्रश्न, तथा पूरक प्रश्न पूछने बजट पर चर्चा करने की शक्तियां दी गई थी प्रजासभा व राजसभा के निर्वाचन 1945 में ही हो सकें एवं शासक (मुख्यमंत्री) को राजप्रसनाम से जाना जाता था, स्टेट में लागू की गई।

- मेम्बर साहब **1936** में ग्वालियर स्टेट पंचायत बोर्ड गोरमी मण्डल के अध्यक्ष रहे। (पंचायत बोर्ड ग्वालियर) रियासत में न्याय प्रबंध के लिए संवत् **1908** (सन् **1912**) में छोटे-मोटे विवाद के निपटारे के लिए गठित किया गया था।

- मध्य भारत से ग्राम अशोखर (गाढ़ी) के प्रथम व निरंतर सरपंच (अशोखर, नुन्हाड संयुक्त पंचायत) के रहे।

- सन **1940** में कृषि कार्य सुधार व ग्राम के विकाश के लिए गठित ग्वालियर स्टेट परगना बोर्ड के भी अध्यक्ष रहे।

- पराधीन (गुलाम) भारत में ग्वालियर स्टेट में सन् **1945** में प्रथम आम निर्वाचन हुआ, जिसमें **20** प्रतिशत जनता को मतदान का अधिकार दिया गया था। ग्वालियर स्टेट में दो सदन थे प्रथम प्रजासभा (**90** सदस्य) जिसमें **55** प्रत्यक्ष निर्वाचित व **15** सदस्य सरकारी व **20** सदस्य मनोनीत थे, द्वितीय सभा को राजसभा (समांत) में **40** सदस्य जिसमें **20** प्रत्यक्ष निर्वाचित व **12** सरकारी सदस्य थे। अतः श्री नरवरिया जी प्रजासभा (विधानसभा) में द्विसदनीय गोहद (गोहद व मेहगांव) से निर्विरोध सदस्य (विधायक) मनोनीत किये गये एवं क्षेत्रीय जनता का प्रतिनिधित्व ग्वालियर स्टेट में किया व उनकी समस्याओं को शासक (राजप्रमुख या तत्कालीन मुख्यमंत्री के समक्ष विधान मण्डल में रखा।

- भारत की आजादी के बाद मध्य भारत राज्य में द्विसदनीय गोहद क्षेत्र से **1952** में मेम्बर साहब कांग्रेस पार्टी से (सन् **1952-1957** तक) निर्वाचित विधायक रहे (**01** नवम्बर **1956** को फजल अली राज्य पुनर्गठन आयोग की अनुशंसा पर म.प्र.बना एवं मेम्बर साहब के प्रयास से पृथक मेहगांव क्षेत्र निर्मित हुआ अतः आपको मेहगांव का पितामह कहना अतिसंयोक्ति नहीं होगी)

- सन **1957** से **1962** विधानसभा में कुख्यात डकैत गब्बरसिंह के हस्तक्षेप के कारण मात्र **150** वोटों से आप को पराजित होना पड़ा।

- मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव में आप तृतीय बार विधायक निर्वाचित हुए (सन **1962** से **1967** तक)

- म.प्र. **20** सूत्रीय कमेटी में सदस्य रहे।

- शिक्षक चयन, पंचायत सचिव, सोसायटी सचिव के चयन कमेटी में अध्यक्ष रहे।

- गहन पशु चिकित्सा क्षेत्र में सुधार कमेटी के अध्यक्ष रहे।

- म.प्र.राज्य प्रशासन सुधार आयोग व पूर्व मंत्री श्री नरसिंहराव दीक्षित के निजी सलाहकार रहे।

- कांग्रेस पार्टी में भी अध्यक्ष रहकर कई संगठनात्मक दायित्व प्रभार रहें।

महत्वपूर्ण उपलब्धियां

- आजादी आने के पूर्व भिण्ड जिले की यह स्थिति थी कि नल व बिजली की कोई व्यवस्था नहीं थी, जिला मुख्यालय पर मात्र **01** हाईस्कूल था. जिले में मात्र **04** ही सडके थी एक भी नदी पर पुल नही था एक मात्र अनाज मण्डी मुख्यालय पर थी।

- मेंबर साहब के प्रयासों से क्षेत्र के सदर अंचलों में गोरमी, मेहगांव, गोहद ग्रामीण अचलों में शासकीय स्कूल स्थापित कराये गये एवं शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किया।

- . मेम्बर साहब के प्रयासों से पंचायत भवनों के निर्माण हेतु प्रयास किये गये,एवं विभिन्न विभागों के शासकीय भवन निर्मित करवाये गये।

- प्रथम पंचवर्षीय योजना से क्षेत्रीय जनता को लाभान्वित कराया।

- मेहगांव,गोहद मण्डी निर्माण एवं किसानों को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित करानाऔर बेरोजगारी,डकैतों के उन्मूलन के व्यापक प्रयास किये गये।

- सिंचाई की व्यवस्था हेतु पगारा डेम का खाका तैयार कर नहर व अन्य साधन किसानों को सुलभ कराये।

- मेम्बर साहब के प्रयासों से मेहगांव, गोहद का बाजार विकसित हुआ,बाहरी व्यापारियों को यहां व्यापार करने को प्रोत्साहित किया एवं बाहरी मुद्रा का भिण्ड में निवेश कराया।

- सघन पशु चिकित्सा के क्षेत्र में दुधारू पशुओं की नस्लों को संकरण कराकर वैज्ञानिकों के माध्यम से उन्नत नस्ल की पशु नस्लें उन्नत कराने का क्रांतिकारी कदम उठाया।

<u>लोधी क्षत्रियों के लिए योगदान</u>

मेम्बर साहब का लोधी समाज के लिए योगदान अमूल्य है जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न है लोधी समाज के **52** राष्ट्रीय अधिवेशन पूर्ण हो चुके है।

- सन **1941** में इटावा में आयोजित **23** वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अपने साथियों के साथ पैदल चलकर भाग लिया एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- इस सम्मेलन से प्रभावित होकर अखिल भारतीय (राष्ट्रीय) स्तर का तीन दिवसीय **25** वां सम्मेलन जो कि ग्राम असोखर में **10, 11, 12** मई **1946** को आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता कुंजीलाल वर्मा, सुंदरलाल वर्मा (आई.सी.ए.जबलपुर) व विष्णुदयाल वर्मा (मैनपुरी) ने की इस सम्मेलन में संपूर्ण भारतवर्ष से लोधी क्षत्रिय समाज के बंधु सम्मिलित हुए का आयोजन कराया था।

- इस सम्मलेन से मेंबर साहब के प्रयास से ग्वालियर राज्य के रेवेन्यू डिपार्टमेंट के तत्कालीन सचिव डी. के. जाधव ने लोधी कौम को "लोधी राजपूत" सरकारी दस्तावेज में लिखने का आदेश जारी किया जिसकी प्रति आज भी सुरक्षित रखी है।

- मेंबर साहब ने भिंड जिला लोधी राजपूत संघ का गठन १९४६ में किया एवं समाज के अध्यक्ष निर्वाचित किये गय।

- मेम्बर साहब ने **1950** में एक सात सदस्यीय कमेटी तैयार की जिसकी प्राथमिकता समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाज से खत्म करना था आपने दहेज़, मृत्युभोज, पर्दाप्रथा, नशाखोरी के खिलाफ बडा आंदोलन तैयार किया।

- मेंबर साहब म.प्र.में लोधी क्षत्रिय समाज के प्रथम विधायक होकर म.प्र.की राजनीति में लोधी क्षत्रिय समाज के प्रमख नेता थे एवं भिण्ड जिला मुख्यालय पर लोधी क्षत्रिय समाज के बालकों की शिक्षा की व्यवस्था हेतु लोधी छात्रावास निर्माण के लिए सन **1960** में आर्य नगर भिंड में भूखंड क्रय किया एवं छात्रावास के निर्माण कार्य की नीव रखी है तभी आज भिण्ड जिले को एक लोधी छात्रावास आर्यनगर भिण्ड (मप्र) में सुलभ है। जिसे हरीसिंह नरवरिया (पूर्व विधायक) ने पूरा निर्माण कर तैयार किया व सुलभ कराया।

- समाज के कई बेरोजगार युवकों को सरकारी नौकरियां दिलवाई व समाज के कई परिवार मुख्यधारा से जोड़ें।

असोखर ग्राम के लिए योगदान

- ग्वालियर से भिण्ड रेल लाइन का निर्माण ०२ - १२ - १८९९ में चालू हुआ इसकी लंबाई ५१.९३ मील है इस लाइन पर पहले ०८ स्टेशन थे, मेम्बर साहब के प्रयत्न से ही इस लाइन पर ९वां स्टेशन असोखर के नाम से बनाया गया।

- मेघपूरा से असोखर तक का पहुंचमार्ग मेम्बर साहब के प्रयास से ही १९५२ में निर्मित कराया गया।

- अशोखर ग्राम को पोस्ट (डाक विभाग) बनाया गया जो बाद में नुनहड हो गई है।

- अशोखर में प्राथमिक शाला भवन निर्मित कराया व जमीन दान में दी।

- ग्राम मेघपुरा में पशु मेला प्रारंभ कराया।

- ग्राम में तालाब का जीर्णोधार कराकर पंचायत भवन का कार्य पूर्ण कराया ।

निधन

- मेंबर साहब १६ - १० - १९९१ को पंचतत्व में विलीन होकर कैलाशवासी हो गये।

❖ अमर शहीद निर्भय सिंह लोधी

आजादी की लड़ाई में गांव की माटी में जन्मे सपूतों ने भी अपनी जान की बाजी लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अंग्रेजों के अत्याचार के आगे सीना तानकर खड़े होने वाले युवा शहीदों की कुर्बानियों का ही नतीजा है कि आज भारत माता की गुलामी की बेड़ियां कट सकीं और भारतवासी आजादी की खुली हवा में सांस ले पा रहे हैं। ऐसे ही एक अमर शहीदों की फेहरिस्त में शामिल शहीद निर्भय सिंह लोधी के बलिदान को दतिया जिले के बसई क्षेत्र के गांव सांकुली के लोग आज भी याद करते हैं।

अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले अमर शहीद निर्भय सिंह लोधी ने सांकुली गांव के किसानों पर जब अत्याचार होते देखा तो उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। किसानों को अंग्रेजी अत्याचार से बचाने के लिए उन्होंने हंसते-हंसते सीने पर गोली खाकर प्राणों की आहूति दे दी। जब अंग्रेजी हुकूमत ने सूखा पड़ने के बाद भी लगान बढ़ा दिया, तो किसानों की कमर टूट गई। अंग्रेजी अफसरों ने जब गांव में आकर जबरन लगान वसूली के लिए अत्याचार किया और उन पर लाठियां भांजी। ये देखकर निर्भय सिंह का खून खोल उठा और वह किसानों का साथ देने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ खड़े हो गए। अत्याचार के कारण नाराज निर्भय सिंह ने लगान वसूली करने आए अंग्रेज अफसरों पर हमला बोल दिया। इसमें दो कर्मचारियों की मौत हो गई।

इस घटना से अंग्रेजी हुकूमत को बड़ा झटका लगा और उन्होंने बौखलाकर निर्भय सिंह और किसानों पर गोलियां दागी। इसमें निर्भय सिंह शहीद हो गए। इस घटना के बाद क्षेत्र के किसानों को संबल तो मिला पर निर्भय सिंह को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। आमने-सामने की लड़ाई में दुश्मन को ढेर कर शहीद हो गए। अब भी शहीद का परिवार सांकुली गांव में ही रहता है। जहां उनके नातीगण शिवनारायण लोधी, बालकिशन लोधी, रोशनलाल लोधी, कल्याण सिंह आदि सभी लोग रहते और किशनी से करते है। शासन ने वर्ष 2008 में उनका स्मारक भी बनवा दिया है। इस दिलेरी के लिए गांव ही नहीं देश के लोग भी शहीद निर्भय सिंह को याद करते हैं जिन्होंने अंग्रेजों से टक्कर लेकर हंसते-हंसते प्राण गवां दिए थे।

भारतीय इतिहास में लोधी सम्वत् का स्थान

किसी भी जाति या संस्कृति का विशेष परिचय पाने के लिये तत्संबधी साहित्य ही एक मात्र आधार है और इसकी प्रमाणिकता का परिचय पाने के लिये व्यापारियों रहवासियों अथवा विदेशी राजदूतों, आक्रमणकारियों, विजेताओं, धर्म के प्रचार हेतु धार्मिक गुरुओं का देशाटन, राजाओं की विजय, रीतिरिवाज, पट्टावली भू-गर्भ से प्रापत शिलालेख ही सम्बतों के मूलाधार हैं। जितेन्द्रीय सुख के लिये संसार की सुख सुविधाओं को तिलांजलि देकर निर्जन वन में अपनी तपस्या के द्वारा संसार के प्राणी मात्र को सनातन से परिचय देकर यदाकदा वाणी से अथक कलम से अपने अनुभवों का सृजन करते समय प्रचलित वर्ष लिपिबद्ध कर समय के चक्र में अपना स्थान बना लेते हैं। यही काल आज सम्वत का स्थान पाकर जनमानस को इतिहास की प्राचीनता खोजने में मददगार हैं।

भारतीय इतिहास का अप्रितम शिलालेख मैसूर के मुम्मडि नगर में आज भी स्थित है जो १८३२ वर्ष पूर्व राजाधिराज सालिवाहन ने अपने राज्य के मुम्मडि नगर में विशाल शिवालय के बाहर भारत की तत्कालीन स्थिति तथा मित्र राज्यों के राज्य की सीमाये, इस राज्य में प्रचलित सम्वत, पैदावार प्रमुख उपासना स्थलों का वर्णन, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति, सेना तथा राज्य की सीमायें और प्रमुख रुप से व्यापार का वर्णन है, यह शिलालेख प्राकृत संस्कृत, पाली तथा तेलगू भाषा में उत्कीर्ण है। इसमें विक्रमादित्य के पश्चात् ब्रह्मकालीन लोधी के राज्य में प्रचलन का वर्णन खुदा हुआ है। उस शिलालेख में प्रथम वीर निर्वाण सम्वत, फिर विक्रम सम्वत् के बाद लोधी सम्वत् उत्कीर्णहैं, जो सालिवाहन राजा ने अपने राज्याभिषेक के समय प्रारंभ किया था। इस शिलालेख के अतिरिक्त कई जैन मूर्ति तथा भगवान की मूर्तियों के अतिरिक्त कई कपड़ों तथा चित्रों में लोधी सम्वत् उत्कीर्ण है जो आज भी मैसूर के जिला संग्रहालय में देखे जा सकते हैं। ब्रह्मस्वरुप भागकर आस-पास केराज्यों में शरण लेने चले गये उसके बाद उन्होंने पड़ौसी राजयों से आक्रमण कराकर छल से ब्राह्मणरुप लोधी को मरवा दिया और उसके मरने के पश्चात् ब्राह्मणों ने नवागत राजा रामदेव सिंह से ब्रह्मणस्वरुप लोधी के राज्य का साहित्य, संस्कृति और उसके द्वारा समस्त वस्तुओं को नष्ट करा दिया और राक्षसी राज्य की समाप्त की घोषणा कर एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया जिसमें भारत के अधिकांश राजा आमंत्रित किये गये उसी यज्ञ में पुरोहित द्वारा यह घोषणा की गई की अब ब्रह्मस्वरुप लोधी का राक्षसी राज्य समाप्त हो गया और लोधी क्षत्रियों को राजकाज से दूरकर पूर्णरुप से किसान का जीवन यापन करने को मजबूर किया तथा अन्य क्षत्रियों में उनके प्रति हीन भावना फैलायी जो आज भी दृष्टिगोचर होती है ।

पंडित काशीलाल जायसबाल ने अपनी पुस्तक सनातन में ८३२ पेज के दूसरे पेज में इसका विस्तृत विवेचन किया है, उसमें उन्होंने ब्रहमस्वरुप लोधी के राज्य में लोधी सम्वत् का प्रचलन पड़ौसी राज्य वीरभद्र को जीतने की खुशी में लोधी सम्वत् का प्रारंभ किया पर जुगल किशोर मुख्तार ने ब्रह्मस्वरुप लोधी जो कि विक्रमादित्य के बाद हुआ के राज्याभिषेक के साथ ही लोधी सम्वत् प्रचलन में आया। परन्तु डॉ. हेमनत जैकोवी ने इसका प्रचलन सिंह की जीत की खुशी में राजाधिराज की उपाधि के साथ लोधी सम्वत का प्रचलन शुरु हुआ, इसका समाधान करते हुए जार्ज चामान्टियर ने ब्रह्मस्वरुप लोधी के राज्याभिषेक को ही प्रमाणिक मानकर लोधी सम्वत् का प्रारंभ काल माना है।

भारत के इतिहास में अभी तक नौ सम्वत् प्रकाश में आये हैं -वीर निर्वाण सम्वत्, विक्रम सम्वत्, लोध सम्वत् शक सम्वत्, सालिवाहन सम्वत्, ईसवी सम्वत्, गुप्त सम्वत्, हिजरी सम्वत्, तथा मघा सम्वत् है।

महेशचन्द्र जैन "शील"

अध्याय 5 - इतिहास के झरोखे से

ग्वालियर दुर्ग के गुजरी महल परिषर में मौजूद लोधा (लोधी) क्षत्रियों का अभिलेख

१६०—वि० १३४०—नरवर (शिवपुरी) जैन-प्रतिमा-लेख। प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८२, सं० ६।

१६१—वि० १३४८—कोलारस (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० १, लि० नागरी, भा० संस्कृत। एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ८२।

१६२—वि० १३४९—ग्वालियर (गिर्द) गू० म० संग्रहालय में रखा हुआ प्रस्तर-लेख। पं० १७, लि० नागरी भा० संस्कृत अशुद्ध। (रणथम्भोर के) माहमान हम्मीरदेव जब शाकम्भर (सांभर) में राज्य कर रहे थे, उस समय लोधाकुल उत्पन्न महना जैतसिंह द्वारा छिभाडा ग्राम में तालाब बनाने का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६३३। अन्य उल्लेख: आ० स० इ०, वार्षिक रिपोर्ट १९०३-४ भाग २, पृ० २८६। प्राप्तिस्थान अज्ञात है।

१६३—वि० १३५०—सुरवाया (शिवपुरी) पं० २७, लि० नागरी, भा०

राणा भीम सिंह जाट की छतरी जिन्हे गोहद युद्ध में सेनापति धुआँराम सिंह लोधी जी ने हराया था

महाराज रघुराज

भदौरिया क्षत्रियों का अटेर दुर्ग

भदावर का राज चिन्ह

ग्वालियर के सिंधिया राजवंश का राज चिन्ह

ग्वालियर के किले की पुरानी पेंटिंग - 1790 (ब्रिटिश लाइब्रेरी)

गोहद युद्ध के पक्ष्यात भदावर राजा महेन्द्र गोपाल सिंह भदौरिया ने सेनापति धुआँराम सिंह और उनके सहयोगी ठाकुर परमेश्वरि लाल सिंह के वंशजो को उनकी वीरता के सम्मान के लिए दी गयी मुहरें

लोधी क्षत्रियों की अशोखर जागीर के गढ़ी के अवशेष

ग्वालियर नरेश श्रीमंत जीवाजी राव सिंधिया द्वारा दिया गया आदेश जिसमे उन्होंने लोधी क्षत्रिय जाती को राजपूत मानकर सभी सरकारी कागजातों में लोधी के साथ राजपूत लिखने का आदेश दिया

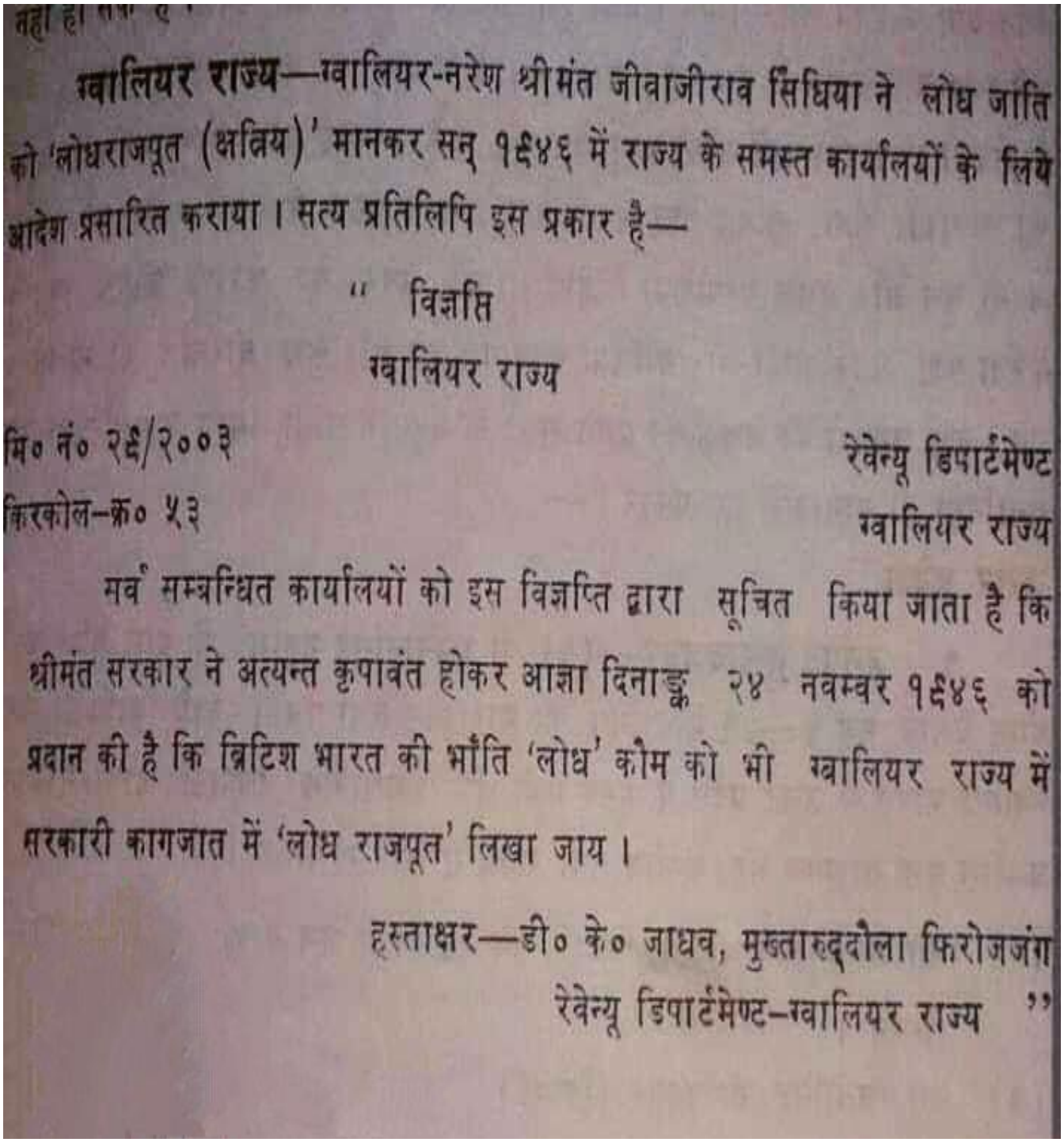

ग्वालियर राज्य—ग्वालियर-नरेश श्रीमंत जीवाजीराव सिंधिया ने लोध जाति को 'लोधराजपूत (क्षत्रिय)' मानकर सन् १९४६ में राज्य के समस्त कार्यालयों के लिये आदेश प्रसारित कराया। सत्य प्रतिलिपि इस प्रकार है—

" विज्ञप्ति

ग्वालियर राज्य

मि० नं० २९/२००३ रेवेन्यू डिपार्टमेण्ट

किरकोल–क्र० ५३ ग्वालियर राज्य

सर्व सम्बन्धित कार्यालयों को इस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया जाता है कि श्रीमंत सरकार ने अत्यन्त कृपावंत होकर आज्ञा दिनाङ्क २४ नवम्बर १९४६ को प्रदान की है कि ब्रिटिश भारत की भाँति 'लोध' कौम को भी ग्वालियर राज्य में सरकारी कागजात में 'लोध राजपूत' लिखा जाय।

हस्ताक्षर—डी० के० जाधव, मुख्तारुद्दौला फिरोजजंग

रेवेन्यू डिपार्टमेण्ट–ग्वालियर राज्य "

TRUE COPY

No. 87 - 33 - XVI

From

Permanand, Esq. B.Sc. Bar-at-Law. I.C.S.,
Secretary to Government
Central Provinces and Berar
Land Records Department.

To

The General Secretary,
All India Lodhi Rajput Mahasabha,
Motinala Ward,
Jubbulpore.

Dated Nagpur, the 25th April 1941.

Subject :- Recording of the caste of the members of Lodhi community as "Lodhi Rajput" in the Land Records Papers.

Sir,

With reference to your letter No. 231, dated 11th February 1941, to the Under Secretary to this Government, General - Administration Department, I am directed by the Governor of the Central Provinces and Berar, to inform you that if any one recorded as Lodhi by caste requests that he should be recorded as Lodhi Rajput, this will be done.

The Deputy Commissioners, Central Provinces and Berar, are being instructed accordingly.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,

N.P. Shrivastav.
Under Secretary
for Secretary to Government
Central Provinces & Berar
Land Records Department.

No. 88 - 33/XVI Dated Nagpur, the 25th April 1941.

Copy forwarded to all Deputy Commissioners, C.P. and Berar, for information and favour of necessary action.

N.P. Shrivastav.
Under Secretary,
for Secretary to Government
C.P. and Berar,
Land Records Department.

TRUE COPY.

General Secretary,
All India L. R. Mahasabha.

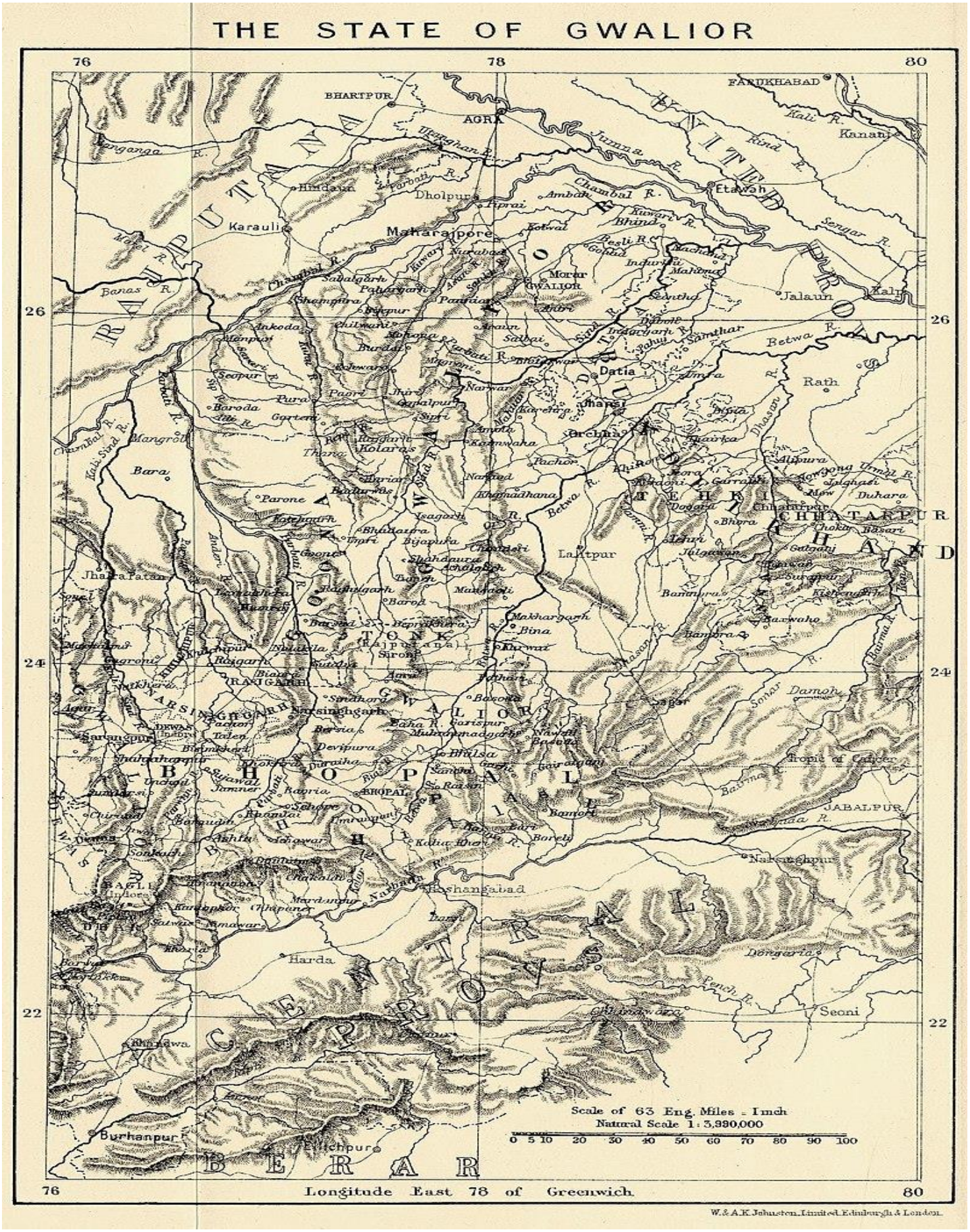

THE STATE OF GWALIOR

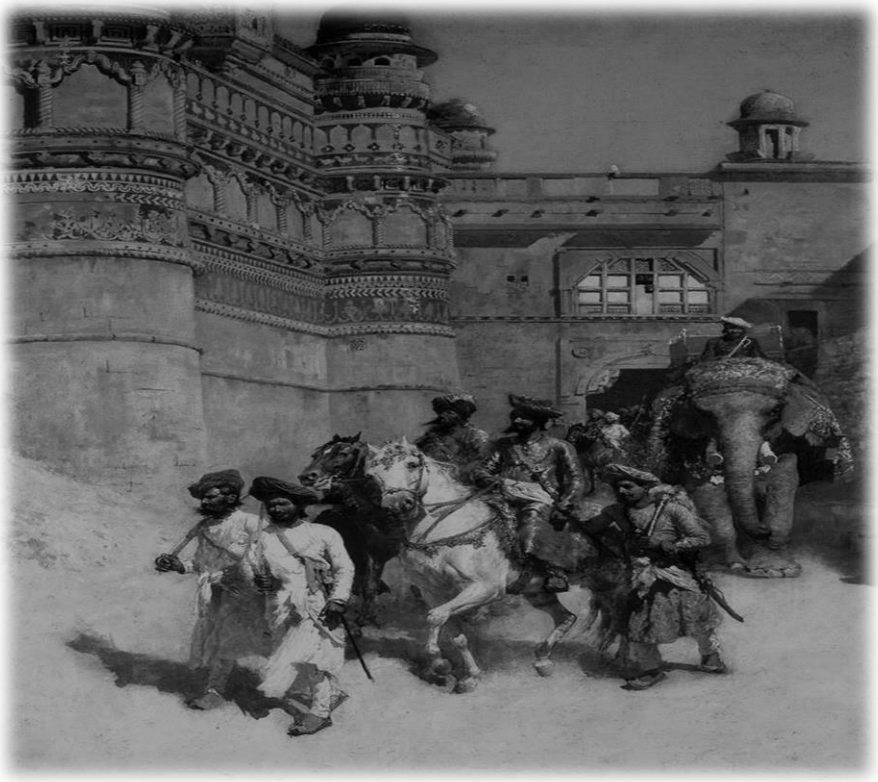

अपने महल से प्रस्थान करते हुए ग्वालियर के महाराजा

सहस्त्रबाहु मंदिर (सास - बहु का मंदिर) ग्वालियर दुर्ग

महाराज माधव राव सिंधिया (1876 - 1925)

हवलदार सुल्तान सिंह नरवरिया

डीग दुर्ग

डीग महल

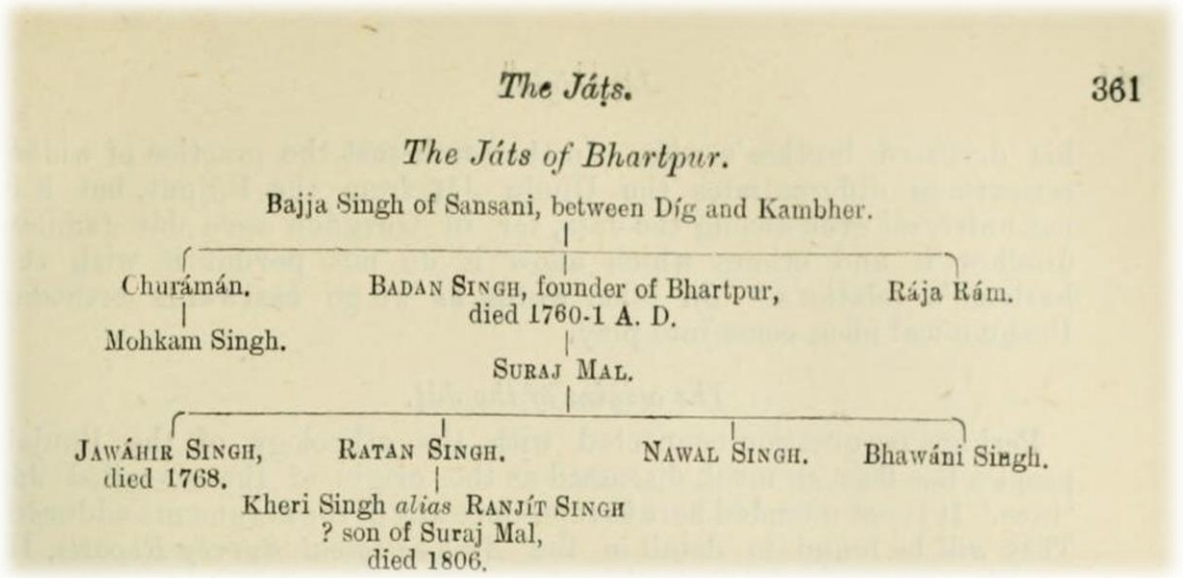

The Jáṭs. 361

The Jáṭs of Bhartpur.

Bajja Singh of Sansani, between Díg and Kambher.

Churámán. — Mohkam Singh.

BADAN SINGH, founder of Bhartpur, died 1760-1 A. D.

Rája Rám.

SURAJ MAL.

JAWÁHIR SINGH, died 1768.

RATAN SINGH.

NAWAL SINGH.

Bhawáni Singh.

Kheri Singh *alias* RANJÍT SINGH
? son of Suraj Mal,
died 1806.

महराज बदन सिंह जाट

ठाकुर खजान सिंह लोधा जी
रियासत - भौनपुरा (भवनपुरा)

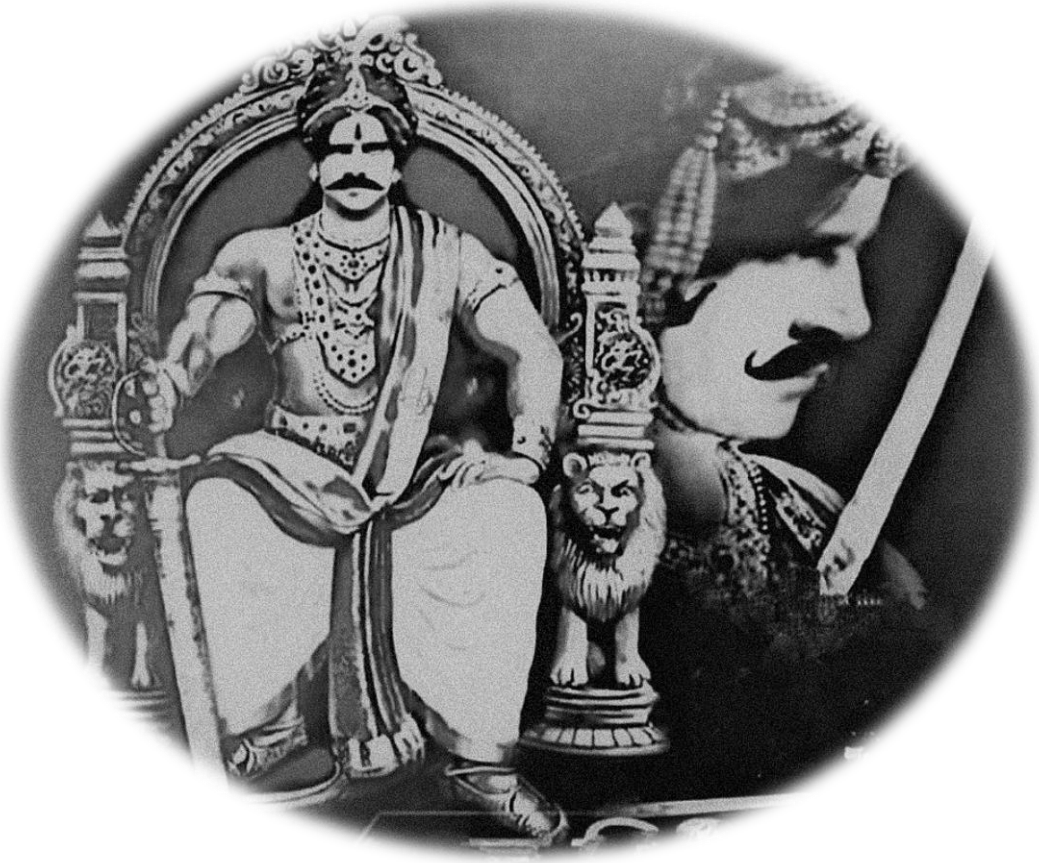

महराज ब्रह्मस्वरूप लोधी (लोधी सम्वत के संस्थापक)

में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का - *कुँवर अनिल सिंह राजपूत*

में अवन्ति सरस्वती प्रभावती, बन फिर जोहर दिखलाने आयी हूँ,
में क्षत्राणी हूँ लोधी वंश की, स्वाभिमान बचाने आयी हूँ।

में यौधेय बन सिकंदर को रौंदने आया हूँ,
में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का रणकौशल दिखलाने आया हूँ।

में नृपभानु बन द्रण्ड संकप्ल करने आया हूँ,
में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का अपना वैभव दिखलाने आया हूँ।

में रिखोला सिंह बन अपने कुल का परचम लहराने आया हूँ,
में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का वीरता दिखलाने आया हूँ।

में परमाल का मित्र बन मित्रता निभाने आया हूँ,
में ईश्वर दास लोधी बन पृथ्वीराज से टकराने आया हूँ।

में तेजी सिंह बन जहाँगीर को ललकारने आया हूँ,
में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का पराक्रम दिखलाने आया हूँ।

में धुआँराम सिंह बन भदौरियों का मुकुट बचाने आया हूँ,
में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का शौर्य दिखाने आया हूँ।

में राजा नरु बन चौहानो की लाज बचाने आया हूँ,
में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का अपनी मर्यादा दिखलाने आया हूँ।

1842 में ही में देश आजाद कराने आया हूँ,

में हिरदेशाह लोधी बन देश प्रेम सिखलाने आया हूँ।

में छबीला राय लोधी बन सैयद बंधुओं को मोत के घाट उतारने आया हूँ,

में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का राजपूत रेजिमेंट इस्थापित करने आया हूँ।

में सुल्तान सिंह नरवरिया बन कारगिल जिताने आया हूँ ,

में क्षत्रिय हूँ लोधी वंश का देश के दुशमनो को उनकी औकात दिखाने आया हूँ..।।

Annexure (संदर्भ)

- **लोधी शब्द की परिभाषा व् उत्पत्ति**

१. ऋग्वेद के तीशरे मंडल में अध्याय चार के ५३वे सूत्र के २३वे मन्त्र, जिसे ३, ५३, २३ कहते हे

२. भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व अध्याय - १५

३. 'भृगु' सहिंता उत्तर भाग, श्री परशुराम विजय अध्याय ३४

४. परशुराम सहिंता, प्रहस्त संवादे अध्याय ८२ के १९वे श्लोक

५. सनत कुमार सहिंता के उत्तर भाग के १८वे अध्याय

६. गर्ग सहिंता मध्य भाग ५१ श्लोक ८२

७. भविष्य पुराण अध्याय १५

८. अत्रि सहिंता उत्तर भाग श्री परशुराम विजय अध्याय ३४, पक्षिम यात्रा भृगुवाच

९. परशुराम सहिंता प्रहस्त संवादे अध्याय ८२ श्लोक १९ पृष्ठ ३०९

▪ पुस्तकें व ग्रन्थ जो अध्यन किये

1. भदावर का संक्षिप्त इतिहास लेखक स्व. इंद्रपाल सिंह भदौरिया
2. ग्वालियर राज्य के अभिलेख
3. लोधी क्षत्रिय वृहत इतिहास
4. लोधी राजपूत विशेषांक
5. भारतीय उपमहाद्वीपीय इतिहास में लोधी वीरों का स्वर्णिम योगदान
6. “संघर्ष के प्रतिक” ठाकुर गुल्ला राम सरपंच लेखक डॉक्टर रमा कान्त लवानिया **2004**
7. “कर्नल टाड कृत” राजस्थान का इतिहास – पंडित ज्वाला प्रसाद श्री कृष्ण दास श्री बैंकटेश्वर प्रेस बोम्बे भाग **2** पृष्ट **487-493** प्रकाशन **1907**
8. कर्नल टाड कृत” राजस्थान का इतिहास – अनुवादक श्री केशव ठाकुर प्रकाशक – साहित्यागार चौड़ा रास्ता जयपुर राजस्थान भाग **1** व **2** प्रकाशन **2003**
9. राज परिवार के सदस्यों व अन्य लोगो के साक्षात्कार एवं बर्तमान में मोजूद प्रमाणों के आधार पर
10. करौली इतिहास के झरोखे से - दामोदर लाल गर्ग
11. तवारीख ये करौली - हबीब फ़ारसी
12. राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ५८८ - जगदीश सिंह गहलोत
13. हिन्दू ट्राइब्स एंड कास्ट – शेरिंग

करौली-इतिहास के झरोखे से

दामोदरलाल गर्ग
साहित्यकार

द्वितिय संस्करण
मार्च 1984

मूल्य 10/—

उटगिरि दुर्ग और आगरा दुर्ग का शिलान्यास:– जैसाकि पूर्वमें बतलाया जाचुका है कि इस बीहड़ पहाड़ी चम्बल किनारे वाले क्षेत्र पर बहुत समय से लोधी राजपूतों का कब्जा था लोधी राजपूतों ने जहां बन्ध बंधवाये और कच्चे तालाब बनवाये वहां अपनी सुरक्षा हेतु एक दुर्ग का निर्माण को कराया। लगभग डेढ़ हजार फीट की सुरंगनुमा पहाड़ी पर बना होने के कारण एवं प्रशस्त मार्ग के अभाव में लोग उससमय गिरते-पडते पहुँचते रहे होंगे इसीवजह से दुर्ग का नाम किसी खास राजा के नाम पर न रखकर उटगिरि पड़ गया हो।

इस किले के निर्माण के बारेमें एक लोकगाथा काफी प्रचलित है "भोदू राज खण्डियार का उटगिरि दियो बनाय" यानी लोधी राजपूतों ने अपनी छलवृत्तियों से खण्डार (सवाई माधोपुर) के लोगों से बेगार में इस किले का निर्माण कराया हो। उपललेख के अभाव में इसके निर्माणकाल तथा किसने इसे बनवाया पुष्टि नहीं होती। यह तो स्पष्ट है कि इसकिले का निर्माण लोधी राजपूतों के शासनकाल में हुआ जिसे बादमें अर्जुनदेव ने छीनलिया उपरांत जमीन के टैक्स वसूली के आधार पर पुनः लोधियों को संभलवा दिया।

अर्जुनदेव के नाती अभयचन्द (सन् 1403–1423) की मृत्यु के बाद उसका लड़का पृथ्वीपाल द्वितिय करौली की गद्दीपर बैठा उस समय अफगानियों ने तिमनगढ़ पर अधिकार कियाथा इसी दौरान पृथ्वीपाल ने ग्वालियर के शासक मानसिंह तोमर के आक्रमण को असफल* किया परन्तु मचामीनाओं को दवाने में असफल रहा। भाईयों की आपसी वैमनस्यता के कारण मण्डरायल का इलाका बिट्रिश सरकारके दखल से इनसे खाली करालिया गया जिसकी एवंज में मासलपुर का परगना

5– दिल्ली सल्तनत पृष्ठ 831 द्वारा हबीब और अन्य।

जिसके तीनों तरफ बड़े तीन दरवाजों से पुख्ता प्राचीर है जिसमें सभी वर्ग के लोगों के साथ रानीपुरा में राजपूतों की घनी बस्ती है। बागवाले हनुमान के अलावा सीताराम एवं बिहारीजी के दो प्रमुख देवालय हैं। समतल भूमि होने के कारण पैदावार उत्तम है। आवागमन के साधन नग्न्य होने के कारण यहाँ का व्यापार ज्यादातर ऊँटों द्वारा सबलगढ़ से होता था। सुरक्षा और विकास की समुचित योजनाओं के अभाव में सम्पूर्ण क्षेत्र दस्यु आंतकित है।

अर्जुनदेव: — इसे नागार्जुन, अरजनवली के नाम से भी पुकारा जाता था। आला बहादुर होने के कारण इसने मण्डरायल पर अधिकार करलिया। मुगल सम्राट के आंमत्रित करने पर कुछ साथियों को साथ ले देहली गया जहाँ निशान परीक्षा में वहाँ के पहलवान को परास्त कर बहादुरी का परिचय देते हुए दरबार को खुशकर "देव बहादुर" का खिताब लिया साथ ही सम्राट की लड़की का डोला प्राप्त कर हिन्दू संस्कृति के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। मण्डरायल दुर्ग के पास गहवरदान की गुफा कत्र और छत्री क्रमश लड़के बेगम और अर्जुनदेव की संदर्भित घटनाओं को जोड़ते हुए स्थिति है।

टिप्पणी— (अर्जुनदेव अंनगपाल) अर्जुनदेव और नागार्जुन दोनों एक से नाम होने के कारण एवं तत्कालीन जागाओं द्वारा समयपर शासकों का नाम अपनी पुस्तकों में नहीं लिखने की बजह से समस्त इतिहासकारों ने मण्डरायल दुर्ग का विजेता नागार्जुन की बजाय अर्जुनदेव को दर्शाया है। असलियत में अर्जुनदेव की जगह नागार्जुन और अंनग पाल होना चाहिए चूकि अंनगपाल आलाबहादुर जवान था इसने ही मुगल सम्राट से "देव बहादुर" का खिताब प्राप्त किया साथ ही मण्ड-रायल से बयाना तक अपना कब्जा किया स्वयं का राज्याभिषेक को बयाना तख्त पर कराया।

मण्डरायल जीतने के पश्चात पवर राजपूतों से मेलकर शासन क्षेत्र को बढ़ाया। चम्बल नदी के किनारे उटगिरि क्षेत्र जिसपर लगभग 400 वर्षों से लोधी राजपूतों का कब्जा था सम्वत् 1397 में अपने अधि कार में लेलिया। मौहम्मद तुगलक के शासनकाल में सम्वत् 1405 में करौली नगर की नींव डाली। एक महल बाग, अंजनीमाता का मन्दिर

विशेष सहयोगी

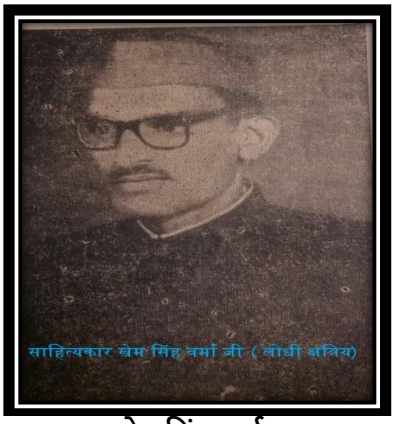

स्व. खेम सिंह वर्मा

स्व. इंद्रपाल सिंह भदौरिया

एडवोकेट संजय सिंह लोधी

इंजीनियर आनंद दुबे

दाऊ सोनू चौहान

इंजीनियर रविंद्र सिंह

लेखक परिचय

अनिल सिंह राजपूत, ग्राम इटौरा बुजुर्ग, महोबा (उत्तर प्रदेश) से है। आप लोधी क्षत्रियों की महालोधी शाखा से है,आपका जन्म 15 अप्रैल 1999 को उक्त ग्राम में माता लक्ष्मी देवी व् पिता कैलाश चंद्र राजपूत के यहाँ हुआ।

आपके पिता प्राइवेट जॉब में हे इसलिए जब आपके पिता जोधपुर में थे तब आपकी प्राम्भिक शिक्षा जोधपुर में हुयी बाद में आपके पिता के ग्वालियर आ जाने के कारण आपकी आगे की शिक्षा ग्वालियर में हुयी अपने 2015 से 2018 के मध्य सरकारी कॉलेज "डॉक्टर भीम राव आंबेडकर पोलटेक्निक कॉलेज" से 'कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग' में डिप्लोमा किया फिर उसके बाद 2018 से 2021 के मध्य "राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय" से 'कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग" में बी. टेक. किया। अनिल सिंह अपने कॉलेज के समय NCC में भी रहे है उन्होंने 3 साल तक आर्मी विंग से NCC में ट्रेनिंग की है।

वर्तमान में आप में जॉब कर रहे हैं और साथ ही कई सामाजिक जन संघठनो से जुड़े हुए है व् साथ ही एक विस्तृत दल के साथ मिल कर "लोधी" जाती के इतिहास पर रिसर्च कर रहे हैं।

चम्बल के लोधी क्षत्रिय वीर लेखक की पहली स्वतंत्र कृति है जिसे उन्होंने एडवोकेट संजय सिंह लोधी के साथ मिल कर लिखा है।

- धर्मेंद्र सिंह राजपूत

अनिल सिंह राजपूत

---------- **** **** ----------